कमल संदेश
ikf{kd i=dk

संपादक
प्रभात झा, सांसद

कार्यकारी संपादक
डॉ. शिव शक्ति बक्सी

सहायक संपादक
संजीव कुमार सिन्हा

संपादक मंडल सदस्य
सत्यपाल

कला संपादक
धर्मेन्द्र कौशल
विकास सैनी

सदस्यता शुल्क
वार्षिक : 100/-
त्रि वार्षिक : 250/-

संपर्क
InL;rk : +91(11) 23005798
Qku (dk-) : +91(11) 23381428
QDl : +91(11) 23387887
पता : डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी.–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003

ई–मेल
kamalsandesh@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक : डॉ. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, के लिए एक्सेलप्रिंट, सी–36, एफ.एफ. कॉम्पलेक्स, झण्डेवालान, नई दिल्ली–55 से मुद्रित करा के, डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003 से प्रकाशित किया गया। सम्पादक – प्रभात झा

विषय-सूची

आवरण कथा : भाजपा स्थापना दिवस

एक रिपोर्ट 7

लेख

भाजपा और ईस्टर सण्डे
– **लालकृष्ण आडवाणी** 11

सुनिए, दूरसंचार की गाथा
– **अरुण जेटली** 13

यमुना नदी में प्रदूषण

श्रीमती सुषमा स्वराज 20

बजट (सामान्य) 2013-14

डॉ. मुरली मनोहर जोशी 22

श्री वेंकैया नायडू 24

कर्नाटक विधान सभा चुनाव 2013

कर्नाटक विधानसभा चुनाव को लेकर सरगर्मी तेज 25
– **राम प्रसाद त्रिपाठी**

अन्य

भाजपा, उत्तर प्रदेश कार्यसमिति बैठक 28

म.प्र. : अटल ज्योति अभियान का शुभारंभ 30

मुख पृष्ठ : *भाजपा मुख्यालय, नई दिल्ली में पार्टी स्थापना दिवस कार्यक्रम*

बोध कथा

जननी जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान

रामायण का प्रसंग है। सीता हरण का दुस्साहस करने वाले लंकाधिपति रावण का भगवान श्रीराम ने अंत कर दिया और लक्ष्मण जी को आदेश दिया कि लंका जाकर वह विभीषण का राजतिलक संपन्न कराएं।

लक्ष्मण लंका पहुंचे, तो स्वर्ण नगरी की अनूठी शोभा तथा चमक-दमक ने उनका मन मोह लिया। लंका की वाटिका के तरह-तरह के सुगंधित पुष्पों को वह काफी समय तक निहारते रहे। वहां की चमक-दमक उन्हें आकर्षित कर रही थी।

विभीषण का विधिपूर्वक राजतिलक संपन्न कराने के बाद वह श्रीराम के पास लौट आए। उन्होंने श्रीराम के चरण दबाते हुए कहा, महाराज, लंका तो अत्यंत दिव्य सुंदर नगरी है। मन चाहता है कि मैं कुछ समय के लिए लंका में निवास करूं। आपकी आज्ञा की प्रतीक्षा है।

लक्ष्मण का लंका नगरी के प्रति आकर्षण देखकर श्रीराम बोले, लक्ष्मण, यह ठीक है कि लंका सचमुच स्वर्ग के समान आकर्षक है, प्राकृतिक सुषमा से भरपूर है, किंतु यह ध्यान रखना कि अपनी मातृभूमि अयोध्या तो तीनों लोकों से कहीं अधिक सुंदर है।

जहां मानव जन्म लेता है, वहां की मिट्टी की सुगंध की किसी से तुलना नहीं की जा सकती। 'अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।' लक्ष्मण अपनी जन्मभूमि अयोध्या के महत्व को समझ गए। उन्होंने कहा, प्रभु वास्तव में हमारी अयोध्या तीनों लोकों से न्यारी है।

प्रस्तुति : शिव कुमार गोयल

व्यंग्य चित्र

साभार : नई दुनिया

प्रिय पाठकगण

कमल संदेश (पाक्षिक) का अंक आपको नियमित मिल रहा होगा। यदि किन्हीं कारणवश आपको अंक प्राप्त न हो रहा हो तो आप अपने प्रदेश कार्यालय को या हमें अवश्य सूचित करें।

-सम्पादक

जन-जन का बल बने 'कमल'

सम्पादकीय

''मैं ना 'हां' करूंगा और 'ना' करूंगा।'' मेरे लिए इससे अच्छी बात क्या होगी कि राहुल गांधी प्रधानमंत्री बनने को तैयार हो जाएं। सबसे बड़े लोकतांत्रिक राष्ट्र के प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह द्वारा गिड़गिड़ाए गए ये शब्द भारत, लोकतंत्र, संविधान के साथ-साथ प्रधानमंत्री के पद की साख और धाक की स्वयं में धज्जियां उड़ा रहे हैं। श्रीमती सोनिया गांधी और राहुल गांधी सहित कांग्रेसियों को, जो उनकी पार्टी के हैं, उनके साथ ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए जिससे वे इस तरह की मजबूरी में और सकते में आ जाएं। यह सच है कि डॉ. मनमोहन सिंह कांग्रेस के नेता हैं। उससे अधिक सच यह भी है कि वे भारत के प्रधानमंत्री हैं। भारत के प्रधानमंत्री के पद का ऐसा काला अध्याय देश ने पूर्व में कभी नहीं देखा। नित्य चीरहरण हो रहा है। पद का क्षरण हो रहा है। आजादी दिलाने का दावा करने वाली कांग्रेस एक घर में सिमट गई है। कांग्रेस को चाहिए कि वह यह कहे हमारा अगला प्रधानमंत्री राहुल गांधी होगा या डॉ. मनमोहन सिंह। पर डॉ. मनमोहन सिंह को मजबूत न बनाएं तो कम से कम मजबूर तो न करें। यूपीए ने देश को अंधे गलियारे में धकेल दिया है।

देश की सीमाएं, संविधान, लोकतांत्रिक स्तंभ, विदेश नीति, सीमावर्ती मसले, देश की कानून व्यवस्था, जैसे अनेक पहलूओं पर चिंताजनक हालात हैं और हमारी खिल्लियां उड़ रही हैं। चीन का बढ़ता दुस्साहस भारत को चिंतित नहीं कर रहा, पाकिस्तान का आतंकवाद थमने का नाम नहीं ले रहा। पूर्वोत्तर की समस्याएं जस की तस धरी हैं। यह सब इसलिए हो रहा है क्योंकि चीन, पाकिस्तान और हमारे जितने भी पड़ोसी देश हैं, उन्हें पता चल चुका है कि भारत में भी पूर्व में प्रधानमंत्री होते थे, पर पिछले नौ वर्षों से भारत में चलता-फिरता जीवित परंतु दंतहीन, स्वादहीन, रंगहीन, गंधहीन, क्रियाहीन और स्वयं हीनता से ग्रस्त प्रधानमंत्री है और यह बात किसी से छुपी नहीं है। डॉ. मनमोहन सिंह लाख दावा करें कि वे 9 साल प्रधानमंत्री के रूप में काट चुके हैं। बात यह नहीं है कि वे कितने दिन से प्रधानमंत्री हैं, बात प्रमुख यह है कि उन्होंने इतने वर्षों में किया क्या? उन्हें खुली चुनौती है कि वे देश को संबोधित कर बताएं कि उन्होंने ऐसा कौन सा कार्य किया जिस पर भारतवासी गर्व करे। किसानों को दिए गए 72 हजार करोड़ ऋण पर, मनरेगा पर, सीधी सब्सिडी कैश बांटने पर, खाद्य सुरक्षा बिल पर कहां-कहां भ्रष्ट्राचार नहीं है? वोट की राजनीति के लिए हम कितने नीचे तक जाएंगे! भ्रष्टाचार की और कितनी नई दुकानें खुलेंगी। कांग्रेस के भ्रष्टाचार से भारत कराह रहा है। पर भारत के इस क्रंदन को गूंगी-बहरी यूपीए नहीं सुन रही। यूपीए गठबंधन की पहली गांठ टी. आर.एस. ने खोल दी। वे बाहर हुए। फिर तृणमूल कांग्रेस, फिर डीएमके, जो बचे हैं, चाहे वो सपा हो, बसपा, राकांपा कोई ऐसा दिन नहीं होता जब इन दलों के नेता प्रधानमंत्री को गरियाते न हों। भारत के प्रधानमंत्री का स्वाभिमान तार-तार हो चुका है। वैसे तो डॉ. मनमोहन सिंह अपने हृदय की ओपन हार्ट सर्जरी करा चुके हैं, पर देश का निवेदन है कि वे अपने को प्रधानमंत्री पद से मुक्त कर भारत को ओपन हार्ट सर्जरी से बचाएं। आपकी स्वास्थ्य से अधिक आवश्यकता है भारत माता की स्वास्थ्य की। लोगों ने अपनी जान देकर भारत माता के पैरों से परतंत्रता की बेड़ियां तोड़ी हैं। कम से कम भारत माता को संकट में डालने का अधिकार न कांग्रेस को है और न यूपीए को।

हर भारतीय दुखी है। अपने गुस्से और दुख का इजहार करने की तारीख की बाट जोह रहा है।

→

भाजपा अध्यक्ष से अमेरिकी राजदूत की भेंट

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने भारत में अमेरिका की राजदूत श्रीमती नेन्सी जे पावेल से भेंट के दौरान 2014 से अफगानिस्तान से नाटो देशों की सेनाओं की वापसी से दक्षिण एशियाई क्षेत्र में पड़ने वाले प्रभाव पर चिंता जताई। श्रीमती पावेल ने श्री राजनाथ सिंह से नई दिल्ली स्थित उनके निवास पर 25 मार्च 2013 को भेंट की। दोनों के बीच लगभग 70 मिनट की बातचीत में आतंकवाद, खुदरा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, व्यापार और प्रौद्योगिकी में दोनों देश के बीच भागीदारी आदि मुद्दों पर भी चर्चा हुई। ■

मेघालय-नगालैंड में भाजपा अध्यक्ष नियुक्त

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने 31 मार्च को पार्टी की मेघालय और नगालैंड इकाई के अध्यक्ष नियुक्त किए। श्री खलूर सिंह लिंगदोह को भाजपा की मेघालय इकाई का नया अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। जबकि श्री चूबा आओ को भाजपा की नगालैंड इकाई के अध्यक्ष के पद पर पुनः नियुक्त किया गया है।■

अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल मिला सुषमा स्वराज से

अमेरिका के तीन सांसदों वाले प्रतिनिधिमंडल ने 2 अप्रैल को नई दिल्ली में लोकसभा में विपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज से भेंट की। संसद परिसर में इस प्रतिनिधिमंडल और श्रीमती स्वराज के बीच लगभग एक घंटे तक विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई। बातचीत के बाद अमेरिकी अतिथियों ने संसद के दोनों सदनों और केंद्रीय कक्ष का दौरा किया और भारत के लोकतंत्र की प्रशंसा की। भाजपा प्रवासी विभाग के संयोजक श्री विजय जौली ने बताया कि अमेरिकी सांसदों के प्रतिनिधिमंडल ने विपक्ष की नेता के साथ बैठक के दौरान अमेरिका की ओर से उन्हें शुभकामनाएं दीं। उनके अनुसार विपक्ष की नेता के साथ वर्तमान वैश्विक स्थिति और भारत में बुनियादी ढांचे के विकास में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश सहित कई विषयों पर विचारों का आदान प्रदान हुआ। ■

➡

हालांकि कांग्रेस लोकतंत्र चुराने के नए-नए तरीकों का ईजाद कर रही है। लेकिन कांग्रेस को सफलता नहीं मिलेगी। सोया भारत जाग चुका है। परिवर्तन अवश्यंभावी है। ऐसे चुनौती भरे समय में भारतीय जनता पार्टी को कमल की तरह खिलकर आना होगा। खिलाड़ी-भाव से खेलना होगा। आपस में कदम मिलाकर चलना होगा। समर्पण की नई कहानी लिखनी होगी। भारत की अगुआई अब वही दल कर सकता है जिस दल में राष्ट्रीयता का भाव हो और दल से पहले देश की चिंता करने का माद्दा हो। वैसे भी गत दोनों लोकसभा चुनावों में यूपीए सरकार दुर्घटनावश बनी। भाजपा जन-जन का बल बने और सम्पूर्ण देश में कमल खिले, इसकी तैयारी में जुट जाना होगा। जन-जन की इस भावना को फलीभूत करने के लिए जमीन पर जबरर्दस्त परिश्रम की जरूरत है। ■

यूपीए सरकार देश की चुनौतियों से लड़ने में विफल रही है : राजनाथ सिंह

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने पार्टी के स्थापना दिवस के अवसर पर कांग्रेस पर निशाना साधा। श्री सिंह ने कहा कि मनमोहन सिंह कौन सी सुधारों को लागू करना चाहते हैं? ऐसे कैसे सुधार हैं जिसके कारण महंगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और पेट्रोल-डीजल के दाम बढ़ रहे हैं। गत 6 अप्रैल को नई दिल्ली स्थित भाजपा मुख्यालय में पार्टी के 33वें स्थापना दिवस पर आयोजित समारोह में अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि यूपीए की सरकार देश की चुनौतियों से लड़ने में विफल रही है। इटली के नौसैनिकों और पाकिस्तान की ओर से दो सैनिकों की हत्या की ओर इशारा करते हुए श्री सिंह ने कहा कि अब तो छोटे देश भी भारत को धमकाने लगे हैं। श्री सिंह ने केंद्र के उस फैसले को भी बुरा बताया जिसमें चीनी को नियंत्रण मुक्त कर दिया गया है।

उन्होंने कहा कि चीनी को नियंत्रण मुक्त करने से चीनी मिल मालिकों को फायदा होगा ना कि किसानों को। इस फैसले के बाद से चीनी मिल मालिकों को 3000 करोड़ रुपये का फायदा हुआ है। सरकार मिल मालिकों के बारे में सोचती है, उसे किसानों की जरा भी परवाह नहीं है।

वहीं श्री सिंह ने भाजपा शासित राज्यों की जमकर प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि भाजपा की राज्य सरकारें अच्छा काम कर रही हैं। साथ ही उन्होंने कहा कि अगर हमारी पार्टी केंद्र में सत्ता में आती है तो हम राज्यों को और अधिकार देंगे।

इस अवसर पर भाजपा संसदीय दल के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि अयोध्या आंदोलन को लेकर 'शर्मिन्दा' होने की जरूरत नहीं है, बल्कि इसकी बजाय इस पर गर्व करना चाहिए। उन्होंने कहा कि उन्हें यह स्वीकार करने में गर्व महसूस होता है कि उनके दल ने राम मंदिर और अयोध्या का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि यह केवल राजनीतिक नहीं बल्कि सांस्कृतिक मुद्दा है।

उन्होंने कहा कि हम एक सांस्कृतिक अभियान का हिस्सा हैं। इसलिए सांसद, विधायक और पार्षद बन जाना ही हमारा लक्ष्य नहीं होना चाहिए। हमने जिस परम वैभव का ध्येय रखा है, उसके लिए आदर्श कार्यकर्ता बनना महत्वपूर्ण हैं।

कार्यक्रम का संचालन भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा ने किया। इस अवसर पर मंच पर भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन) श्री रामलाल, राष्ट्रीय महामंत्री श्री अनंत कुमार, दिल्ली प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष श्री विजय गोयल एवं दिल्ली विधानसभा में विपक्ष के नेता प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा उपस्थित थे। ■

6 अप्रैल 2013 को भारतीय जनता पार्टी के 33वें स्थापना दिवस पर देश के सभी प्रांतों में अनेक कार्यक्रम किए गए। पार्टी ध्वजारोहण किया गया। प्रभात फेरियां निकाली गईं। संगोष्ठियों का आयोजन किया गया। हम यहां संक्षिप्त समाचार प्रकाशित कर रहे हैं:-

मध्यप्रदेश

भारतीय जनता पार्टी का 33वां स्थापना दिवस प्रदेश के सभी 230 विधानसभा क्षेत्रों में पार्टी के संगठनात्मक 641

मंडलों, नगर और ग्राम केन्द्रों में रचनात्मक कार्यक्रम के रूप में आयोजित किया गया। प्रभातफेरियां, मोटरसाईकिल रैलियां, साहित्यिक प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी। सभाओं और गोष्ठियों के माध्यम से मध्यप्रदेश में पार्टी संगठन के विस्तार, पार्टी की रीति और नीति तथा मध्यप्रदेश में पार्टी के 9 वर्षों के सरकारी कार्यकाल में प्रदेश की देश में अव्वल दर्जे की विकास दर और कृषि के क्षेत्र में 18.91 प्रतिशत की वृद्धि दर के लिए प्रदेश की जनता और किसानों को बधाई दी गयी।

पार्टी के वरिष्ठ नेता, पूर्व मुख्यमंत्री, सांसद कैलाश जोशी पार्टी के स्थापना दिवस के अवसर पर करोंद मंडल में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल हुए। उन्होंने 80 लाख रू. से निर्मित होने वाले सामुदायिक हाल का भूमिपूजन किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि देश में कई राजनैतिक दल है उन सभी में भाजपा की पहचान राष्ट्रवादी संगठन के रूप में है। कार्यकर्ताओं को राष्ट्रवाद की इसी विचारधारा को आगे बढाना है। पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव, सांसद थावरचंद गेहलोत ने उज्जैन जिले के नागदा के बनबनी गांव में 13 लाख रू. की लागत से बनने वाली सड़क का भूमिपूजन किया और खाचरौंद के मेसोदा में बैंक भवन का लोकार्पण करते हुए स्थापना दिवस पर सभी को बधाई दी।

भोपाल के सभी मंडलों में प्रात: युवा टोलियों ने प्रभातफेरी के साथ हर घर भाजपा का ध्वज लगाकर पार्टी के 33वें स्थापना दिवस की बधाई दी। समता चौक न्यू मार्केट पर आयोजित हवन-यज्ञ में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, वरिष्ठ नेता, पूर्व मुख्यमंत्री कैलाश जोशी, प्रदेश संगठन महामंत्री अरविन्द मेनन, वरिष्ठ मंत्री उमाशंकर गुप्ता शामिल हुए। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भाजपा के 33वें स्थापना दिवस की शुभकामना देते हुए कहा कि मध्यप्रदेश निरंतर भाजपा की अगुवाई में विकास के नये आयाम स्थापित कर रहा है। भाजपा सरकार प्रदेश को नई ऊंचाईयों तक ले जाने के लिए प्रयासरत है। उन्होंने कहा कि भाजपा ने शुरू से ही विकास को अपना लक्ष्य माना है। मध्यप्रदेश सरकार उसी लक्ष्य की ओर अग्रसर है। इस अवसर पर प्रदेश प्रवक्ता रामेश्वर शर्मा, विश्वास सारंग, प्रदेश कार्यालय मंत्री आलोक संजर, रमेश शर्मा गुट्टू भैया, रामदयाल प्रजापति, जिला अध्यक्ष आलोक शर्मा, ऊषा चतुर्वेदी, बीडीए अध्यक्ष सुरेन्द्रनाथ सिंह, विधायक ध्रुवनारायण सिंह, विजेष लूनावत, सीमा सिंह, चेतन सिंह, अनिल अग्रवाल, सत्यार्थ अग्रवाल, महेश शर्मा, विकास विरानी सहित बड़ी संख्या में पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित थे।

जिले के सभी मंडलों में स्थापना दिवस पर सुंदरकांड पाठ के आयोजन हुए। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष व सांसद नरेन्द्र सिंह तोमर ने मुरैना जिले के 6 विधानसभा क्षेत्रों में 19 मंडलों में 470 ग्राम पंचायतों और 1300 मतदान केन्द्रों के प्रतिनिधियों को स्थापना दिवस की बधाई देते हुए कहा कि देश में भाजपा ने आम आदमी को विकास की धुरी बनाकर साबित कर दिया है कि प्रदेश में गांव, गरीब और किसान की सरकार है। किसान को 9 वर्षों में राज्य सरकार ने संबल दिया है। किसानों को ऋण ग्रस्तता से मुक्ति दिलायी। जीरो प्रतिशत ब्याज पर फसल कर्ज देकर उनकी खुशहाली का मार्ग प्रशस्त किया है। पूरे प्रदेश में वरिष्ठ भाजपा नेताओं ने इस मौके पर आयोजित कार्यक्रमों में शिरकत की।

उत्तर प्रदेश

वाराणसी, इलाहाबाद, कानपुर, आगरा, मेरठ, बुलंदशहर और मथुरा में कार्यकर्ता सम्मेलन के आयोजन किए गए हैं। भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष सूर्य प्रताप शाही के नेतृत्व में देवरिया में बखरा विधानसभा क्षेत्र से अटल संदेश यात्रा के दूसरे चरण की शुरुआत की गई। इस दौरान भाजपा के वरिष्ठ नेता कलराज मिश्र भी मौजूद थे।

भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता विजय बहादुर पाठक ने बताया कि 33वें स्थापना दिवस के मौके पर राजधानी लखनऊ में होने वाले भव्य कार्यक्रम की अगुवाई प्रदेश अध्यक्ष लक्ष्मीकांत वाजपेयी और स्थानीय सांसद लालजी टंडन ने किया।

राजस्थान

भाजपा प्रदेशाध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे ने सुराज संकल्प यात्रा के तीसरे दिन भाजपा के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में नाथद्वारा ग्रामीण मण्डल द्वारा आयोजित कार्यक्रम में भाग लेकर पार्टी ध्वज फहराया। श्रीमती राजे के साथ इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रीमती किरण माहेश्वरी, राष्ट्रीय सचिव श्री भूपेन्द्र यादव, नेता प्रतिपक्ष श्री गुलाब चंद कटारिया तथा विधायक श्री कल्याण सिंह भी मौजूद थे। ऐतिहासिक स्थल खमनोर (हल्दीघाटी) के प्रताप स्मारक पर आयोजित कार्यक्रम में श्रीमती राजे ने कहा कि आज भाजपा का स्थापना दिवस ऐसे पवित्र स्थान पर मनाने का अवसर मिला है, जहां के जर्रे-जर्रे में शौर्य और साहस का अहसास होता है। लेकिन आज इस ऐतिहासिक भूमि पर रह रही हमारी जनता परेशान है। न पानी, न बिजली, न सड़क, न शिक्षा, न डाक्टर, न अध्यापक। सरकार मुफ्त दवा की बात कर रही है लेकिन अस्पतालों में दवा लिखने के लिये डाक्टर नहीं है। इसके बाद श्रीमती राजे हल्दीघाटी के चेतक स्मारक पर गई, जहां उन्होंने शीष नवाकर श्रद्धासुमन अर्पित किये।

हिमाचल प्रदेश

प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्री प्रेम कुमार धूमल ने हमीरपुर जिला मुख्यालय पर भाजपा के 33वें स्थापना दिवस के अवसर पर पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि उठो, जागो और तब तक न रूको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाये, इस संकल्प के साथ धूमल ने कहा कि दुष्प्रचार करने वाले लोगों से भाजपा कार्यकर्ता भ्रमित न हों क्योंकि काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती।

उन्होंने कहा कि दुष्प्रचार करने वालों को मुंह तोड़ जवाब दिया जायेगा। इस अवसर पर बधाई देते हुए श्री धूमल ने कहा कि भाजपा को चिन्तन के साथ सिंहावलोकन की जरूरत है। उन्होंने कहा कि भाजपा की पहचान सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को बढ़ाने वाली पार्टी के रूप में हुई है। पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान से शुरू हुआ। इतिहास भाजपा को 3 बार केन्द्र में सत्ता के सिंहासन पर पहुंचाने में कामयाब रहा और आने वाला कल भी भाजपा का ही है। श्री धूमल ने कहा कि 15 अगस्त, 2014 को लाल किले पर तिरंगा लहराने के लिये हर कार्यकर्ता प्रधानमंत्री बन कर देशभर में काम कर रहा है और भाजपा के नेतृत्व में केन्द्र में अगली सरकार बनना निश्चित है। वहीं, दूसरी ओर जिले के पांचों विस क्षेत्रों नादौन, टौणी देवी, सुजानपुर टीहरा, भोरंज, बड़सर में भी पार्टी के स्थापना दिवस मनाने के समाचार मिले हैं।

जम्मू-कश्मीर

भाजपा के स्थापना दिवस पर शनिवार को जिले में कई स्थानों पर पार्टी ने ध्वजारोहण किया। ऊधमपुर में ध्वजारोहण कार्यक्रम में भाजपा नेताओं व कार्यकर्ताओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। बूथ स्तर पर नेताओं व कार्यकर्ताओं ने पार्टी का ध्वज लहराया और देशभक्ति के गीत गाए। उन्होंने पार्टी को मजबूत करने का संकल्प लिया। ध्वजारोहण कार्यक्रम में भाजपा के जिला उपाध्यक्ष अक्षय कुमार, सुभाष शर्मा, संजय कुमार, वेद प्रकाश गुप्ता, गिरधारी लाल, आशू, साहिल, बिट्टू, अशोक कुमार, रसाल सिंह, ओंकार सिंह, शेलो राम, गुरचरण सिंह, बिल्लू आदि शामिल थे।

बिहार

भाजपा के स्थापना दिवस के मौके पर उप मुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी ने कहा कि गठबंधन कमजोर के साथ नहीं होता, बराबरी के लोगों के साथ होता है। सहयोगी दल के साथ मिलकर बिहार की सभी 40 सीटों पर एनडीए के उम्मीदवारों का परचम लहराएगा। वहीं पटना साहिब से भाजपा सांसद शत्रुघ्न सिन्हा

ने कहा कि यह यूपीए सरकार के समापन का साल है। आज संकल्प तथा विभिन्न पार्टियों के विकल्प – भाजपा का दिवस है। उन्होंने कहा कि एक व्यक्ति भी परिवर्तन कर सकता है। गांधी, जेपी, बोस, तिलक का नाम लेते हुए कहा कि वर्तमान में तो हमारे पास दो-दो लोग हैं, नमो और सुमो।

पटना महानगर द्वारा पार्टी कार्यालय में आयोजित समारोह में श्री सुशील कुमार मोदी ने कहा कि केंद्र में अगली सरकार बिना भाजपा के नहीं बनेगी। और अगला प्रधानमंत्री भाजपा का होगा। उन्होंने पार्टी के लोगों से अपील की कि वे यह प्रतिज्ञा करके जाएं कि 2014 में दिल्ली में अपनी सरकार बनाएंगे। जनता के बीच भाजपा और एनडीए सरकार की उपलब्धियों को गिनाएं, बताएं कि भाजपा के नेतृत्व में ही बेहतर विकल्प मिल सकता है। श्री मोदी ने भाजपा शासित राज्यों के हवाले सुशासन और विकास की उपलब्धियों का ब्यौरा पेश किया। कहा कि कांग्रेस शासित राज्य ऐसी कोई नजीर नहीं पेश कर सके। उन्होंने कहा कि अभी कांग्रेस के नेता देश की जनता को मजबूत करने की बात कर रहे थे। मगर महंगाई, भ्रष्टाचार, दुरावस्था पर कुछ नहीं बोले। आजादी के बाद 55 सालों तक कांग्रेस का शासन रहा उसमें भी 50 साल गांधी परिवार का। तो यह भाषण किसके लिए था। भाजपा किसी की उपेक्षा नहीं करती हर वर्ग-समुदाय को लेकर चलती है जबकि कांग्रेस में गांधी परिवार के अलावा किसी के लिए स्थान नहीं है। समारोह में गंगा प्रसाद, अरुण कुमार सिन्हा, नीतिन नवीन, श्याम किशोर सिंह, भागीरथी देवी, सत्येंद्र कुशवाहा, संजय मयूख, ब्रजेश रमण, टीएन सिंह ने हिस्सा लिया। पार्टी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष व नवनियुक्त राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डा. सीपी ठाकुर ने कहा कि आज देश को सशक्त प्रधानमंत्री की आवश्यकता है। शपथ लें कि ऐसे व्यक्ति को चुनें जो भ्रष्ट न हो और देश का भविष्य गढ़े।

झारखंड

भारतीय जनता पार्टी ने पार्टी के 33वें स्थापना दिवस को राज्यभर में धूमधाम से मनाया। मंडल और जिला मुख्यालयों में स्थापना दिवस के मौके पर कई कार्यक्रम आयोजित कर संगठन की नीतियों को कार्यकर्ताओं के माध्यम से जन-जन तक ले जाने का आह्वान किया गया। राजधानी रांची स्थित प्रदेश कार्यालय में भी स्थापना दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किये गये। इस मौके पर पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. रवीन्द्र राय और अन्य नेताओं ने प. दीनदयाल उपाध्याय के तैल चित्र पर माल्यार्पण किया। इस अवसर पर श्यामा प्रसाद मुखर्जी और प. दीनदयाल उपाध्याय के चित्र पर पुष्प अर्पित कर पार्टी नेताओं ने उनके दिखाये रास्ते पर चलने का संकल्प लिया।

इस मौके पर पत्रकारों से बातचीत करते हुए डॉ. रवीन्द्र राय ने कहा कि पार्टी की स्थापना जिन मूल्यों और निष्ठा को लेकर किया गया है, उसे आगे बढ़ाने का प्रयास जारी रहेगा। स्थापना दिवस समारोह में पार्टी के वरिष्ठ नेता और पूर्व विधायक छत्रुराम महतो, प्रवक्ता प्रेम मित्तल, वरिष्ठ नेता सत्येंद्र मल्लिक, विरंची नारायण, मधुसूदन जारुहार समेत अन्य कार्यकर्ता उपस्थित थे। जमशेदपुर स्थित पार्टी कार्यालय में भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ. दिनेशानंद गोस्वामी ने पार्टी कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम में हिस्सा लिया और पं. दीनदयाल उपाध्याय एवं श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर माल्यार्पण किया। राज्य के अन्य जिलों में भी इस तरह के कई कार्यक्रम आयोजित किये गये।

पंजाब

भाजपा की ओर से स्थानीय चंदन पैलेस में भाजपा का स्थापना दिवस मनाया गया। इसमें भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य स्वर्ण सलारिया, प्रदेश संगठन मंत्री अजय जमवाल, पूर्व प्रदेश प्रधान व पठानकोट के विधायक अश्विनी शर्मा, पूर्व सांसद व राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य विनोद खन्ना, प्रदेश उप प्रधान व जिला प्रभारी उमेश शाकर, प्रदेश सचिव वीरांवाली

शामिल हुए। जिला प्रधान राकेश ज्योति ने सभी मेहमानों का स्वागत किया और भाजपा की ओर से मनाए जा रहे भाजपा के स्थापना दिवस पर रोशनी डाली। उन्होंने लोगों को पार्टी की नीतियों और उपलब्धियों से भी अवगत कराया। पंजाब भाजपा के अध्यक्ष कमल शर्मा को समारोह में पहुंचना था लेकिन किसी कारण इस समारोह में नही पहुंचा।

समारोह को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय बाल कल्याण आयोग के चेयरमैन एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य स्वर्ण सलारिया ने कहा कि छह अप्रैल 1980 को भाजपा की स्थापना हुई थी। इसी दिन से लेकर हर साल भाजपा का स्थापना दिवस मनाया जाता है। कार्यक्रम को भाजपा नेता विनोद खन्ना ने भी सम्बोधित किया।■

भाजपा और ईस्टर सण्डे

लालकृष्ण आडवाणी

गत् रविवार 31 मार्च, 2013 ईस्टर सण्डे (रविवार) था- एक अत्यन्त महत्वपूर्ण ईसाई त्योहार। जार्जियन कैलेण्डर के मुताबिक जबकि अन्य सभी ईसाई त्योहार प्रत्येक वर्ष एक निश्चित दिन पर पड़ते हैं परन्तु ईस्टर एक ऐसा त्योहार है जो प्रत्येक वर्ष विभिन्न तिथियों पर पड़ता है।

उदाहरण के लिए अगले वर्ष ईस्टर 20 अप्रैल, 2014 को मनाया जाएगा।

सन् 1980 में गठित भारतीय जनता पार्टी में हम लोगों के लिए ईस्टर सण्डे का विशेष महत्व है। 1980 में ईस्टर 6 अप्रैल के रविवार को पड़ा था जिस दिन नई दिल्ली में श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने इसकी नींव रखी थी।

जून 1975 में इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने समाजवादी पार्टी नेता श्री राजनारायण की याचिका पर निर्णय देते हुए श्रीमती गांधी के लोकसभाई निर्वाचन को रद्द कर दिया था। प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी चुनावी कदाचार की दोषी पाई गई थीं और उन्हें अगले 6 वर्षों तक कोई भी चुनाव लड़ने के अयोग्य कर दिया गया था।

इस गंभीर घटनाक्रम के बाद कांग्रेस सरकार ने आंतरिक गड़बड़ियों की आड़ में देश पर आपातकाल थोप दिया था। संविधान प्रदत्त सभी मूलभूत अधिकारों को निलम्बित कर दिया गया, विपक्षी दलों के एक लाख से ज्यादा कार्यकर्ता जेलों में डाल दिए गए और मीडिया का ऐसा दमन किया गया जो ब्रिटिश शासन में भी नहीं हुआ था। आपातकाल लगभग 20 महीने तक रहा।

मार्च, 1977 में जब अगले लोकसभाई चुनाव हुए तो भारतीय मतदाताओं ने स्वतंत्रता के पश्चात् पहली बार कांग्रेस पार्टी को नई दिल्ली की सत्ता से उखाड़ फेंका। उस समय के कांग्रेस (ओ) के अध्यक्ष श्री मोरारजी भाई देसाई के नेतृत्व में जनता पार्टी की सरकार बनी।

यद्यपि सन् 1952 के बाद से हुए सभी संसदीय चुनावों में एक प्रचारक या फिर एक प्रत्याशी के रूप में मैंने भाग लिया है परन्तु निस्संकोच मैं कह सकता हूं कि 1977 के चुनाव देश के राजनीतिक इतिहास में सर्वाधिक महत्वपूर्ण रहे हैं। किसी अन्य अवसर पर चुनावों के नतीजों पर भारतीय लोकतंत्र इतना दांव पर नहीं लगा था जितना इन चुनावों में था। यदि कांग्रेस पार्टी यह चुनाव जीत जाती तो भारत के बहुदलीय लोकतंत्र को समाप्त करने के घृणित षड्यंत्र-आपातकाल- को जनता की वैधता मिल जाती! इसी प्रकार, किसी और अन्य चुनाव में भी भारतीय मतदाताओं के लोकतांत्रिक विवेक की यह बानगी नहीं मिलती। मतदाताओं ने कांग्रेस पार्टी को बुरी तरह से दण्डित किया। पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे अनेक प्रदेशों में कांग्रेस को एक सीट भी नहीं मिली।

> ***निस्संकोच मैं कह सकता हूं कि 1977 के चुनाव देश के राजनीतिक इतिहास में सर्वाधिक महत्वपूर्ण रहे हैं।***

मोरारजी भाई सरकार ज्यादा नहीं चल पाई। अंदरूनी उठापठक के चलते1979 में यह गिर गई। अगले लोकसभाई चुनाव 1980 में सम्पन्न हुए। जनता पार्टी के हम लोगों को साफ लगता था कि हम बुरी तरह हारेंगे। परन्तु इस उठापठक ने वास्तव में जनता पार्टी की शोचनीय हालत कर दी। सन् 1977 में 298 सीटें जीतने वाली जनता पार्टी 1980 में मात्र 31 सीटों पर सिमट कर रह गई। इन 31 सांसदों में से जनसंघ की संख्या सन् 1977 में 93 की तुलना में 16 रह गई।

1980 के चुनावों के शीघ्र पश्चात् जनता पार्टी की कार्यकारिणी की बैठक बुलाई गई जिसमें यह तय हुआ कि पार्टी की संगठनात्मक वृद्धि पर ज्यादा ध्यान दिया जाए। पार्टी कार्यकारिणी ने जनता पार्टी का सदस्यता अभियान चलाने का भी फैसला किया ताकि निर्धारित कार्यक्रम के मुताबिक पार्टी के चुनाव कराए जा सकें।

मैं मानता हूं कि इसी निर्णय ने पार्टी के कुछ वर्गों को आशंकित कर दिया जिसे बाद में दोहरी सदस्यता विरोधी अभियान के रूप में जाना गया। यह अभियान जनसंघ के पूर्व सदस्यों के विरूद्ध था जिनके बारे में आरोप लगाया गया कि वे केवल जनता पार्टी के सदस्य नहीं हैं अपितु राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के भी सदस्य हैं। यह सभी को विदित था कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक राजनीतिक दल नहीं है। यह ऐसा था कि किसी कांग्रेसी जो आर्यसमाजी भी है, पर दोहरी सदस्यता का आरोप लगाया जाए! शीघ्र ही यह कानाफूसी अभियान शुरू हो गया कि यदि पूर्व जनसंघियों को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से सम्बन्ध रखने दिया गया तो मुस्लिम मतदाता पार्टी से विलग हो जाएंगे।

दोहरी सदस्यता के मुद्दे पर हुए तीखे विवाद पर एक सही परामर्श प्रख्यात गांधीवादी और स्वतंत्रता-सेनानी अच्युत पटवर्धन ने दिया। उन्होंने 9 जून, 1979 को 'इंडियन एक्सप्रेस' में 'जनता, आर.एस.एस. ऐंड द नेशन' शीर्षक वाले लेख में लिखा-'आपाताकल के विरूद्ध जन-संघर्ष में महान् योगदान की क्षमता के कारण भारतीय जनसंघ को जनता पार्टी के प्रमुख घटक के रूप में शामिल किया गया था। आपातकाल की समाप्ति के बाद से अब तक जनसंघ और या संघ ने ऐसा क्या क्या किया, जिसने श्री मधु लिमये और श्री राजनारायण तथा उनके समर्थकों को इन्हें बदनाम करने का एक उग्र अभियान छेड़ने के लिए प्रेरित किया?

श्री वाजपेयी, श्री नानाजी देशमुख और मैंने इस दोहरी सदस्यता के अभियान का प्रखर विरोध किया। पार्टी की बैठकों में, मैंने कहा कि हमारे साथ पार्टी में ऐसा व्यवहार किया जा रहा है, जैसे मानों हम अस्पृश्य हों। मैंने आगे कहा:

'जनता पार्टी के पांच घटक थे- कांग्रेस (ओ), भारतीय लोकदल, सोशलिस्ट पार्टी, सी.एफ.डी. और जनसंघ। राजनीतिक दृष्टि से कहें तो इनमें से पहले चार द्विज थे, जबकि जनसंघ की स्थिति हरिजन जैसी थी, जिसे परिवार में शामिल किया गया हो।

वर्ष 1977 में इसे पार्टी में स्वीकार करते समय काफी हर्षोल्लास था। पर समय बीतने के साथ परिवार में एक 'हरिजन' की उपस्थिति ने समस्याएं शुरू कर दीं। ऐसा सोचने वाला मैं अकेला नहीं था बल्कि देश भर में पूर्ववर्ती जनसंघ के लाखों कार्यकर्ताओं और समर्थकों की गूंज इसमें शामिल थी। फरवरी-मार्च 1980 में जनसंघ के एक वरिष्ठ पदाधिकारी सुंदर सिंह भंडारी और मैंने देश भर का दौरा कर जमीनी स्तर पर जनता पार्टी के बारे में लोगों के विचार जानने के प्रयास किए। जहां भी हम गए, हमने पाया कि पूर्ववर्ती जनसंघ के कार्यकर्ताओं में इस बात को लेकर घोर आपत्ति थी कि पार्टी के भीतर उनके साथ दोयम दर्जे का व्यवहार क्यों किया जा रहा है।

जनता पार्टी के नेतृत्व ने दोहरी सदस्यता के मुद्दे पर अंतिम निर्णय करने के उद्देश्य से पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की 4 अप्रैल को बैठक बुलाई। इस बैठक से निकलने वाले नतीजों को भांप कर श्री वाजपेयी और नानाजी सहित हमने जनसंघ के पूर्व सदस्यों का एक सम्मेलन 5 और 6 अप्रैल, 1980 को बुलाया।

जैसाकि अपेक्षित था कि 4 अप्रैल को जनता पार्टी की कार्यकारिणी ने पूर्व जनसंघ के सभी सदस्यों को निष्कासित करने का फैसला लिया। अपनी आत्मकथा में मैंने उल्लेख किया है:

"जनसंघ के हम सभी सदस्यों को जनता पार्टी से निष्कासन का फैसला बड़ी राहत लेकर आया। 5 और 6 अप्रैल, 1980 के दो दिवसीय सम्मेलन ने स्फूर्तिदायक भावना और दृढ़ विश्वास जोड़ा।

दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में 3,500 से अधिक प्रतिनिधि एकत्र हुए और 6 अप्रैल को एक नए राजनीतिक दल 'भारतीय जनता पार्टी' (भाजपा) के गठन की घोषणा की गई। अटल बिहारी वाजपेयी को इसका पहला अध्यक्ष चुना गया। सिकंदर बख्त और सूरजभान के साथ मुझे महासचिव की जिम्मेदारी सौंपी गई।''

इस ब्लॉग की शुरूआत में मैंने 'ईस्टर सण्डे' का संदर्भ दिया जिसे ईसाई दो दिन बाद पड़ने वाले गुडफ्राइडे को त्यौहार के रूप में मनाते हैं, माना जाता है कि इसी दिन यीशु पुनर्जीवित हुए थे। ईस्टर सण्डे को ईसा मसीह के पुनर्जीवित होने का दिन जाना जाता है।

हमारी पार्टी के सम्बन्ध में भी 1980 में गुड फ्राइडे के दिन जनता पार्टी के प्रस्ताव से हमें सूली पर चढ़ाया गया और ईस्टर सण्डे के दिन हम पुनर्जीवित हुए।

टेलपीस (पश्च्यलेख)

एक व्यक्ति स्वर्ग पहुंचा और पर्ली गेट्स पर सेंट पीटर से मिला। सेंट पीटर ने कहा आज अलग बात है, तुम्हारे सम्मुख स्वर्ग या नरक का विकल्प खुला है, हम तुम्हें दोनों में एक-एक दिन देंगे और तुम अपनी पसंद बताओगे। अत: व्यक्ति ने कहा ठीक है और उसे नरक भेज दिया।

वह नरक पहुंचा और जहां तक उसकी नजरें जा सकती थीं वहां तक हरियाली थी। उसने बीयर का एक बड़ा पीपा, एक गोल्फ कोर्स और अपने पुराने जिगरी दोस्त देखे। उसने गोल्फ का एक राऊण्ड खेला,पीना-पिलाना हुआ और अपने जिगरी दोस्तों के साथ मौज मस्ती की। उसे लगा यह ठीक है।

बाद में वह स्वर्ग गया। उसने पाया कि वहां शांति है, आप बादलों से दूसरे बादलों पर कूद सकते हो और बीन बजा सकते हो।

दिन बीतते ही सेंट पीटर उसके पास पहुंचे और उससे उसकी पसंद के बारे में पूछा: बगैर रूके उसने कहा: "मैं नरक जाना पसंद करूंगा।''

वह तुरंत नरक गया लेकिन वहां उसे गंदगी और लावा के सिवाय कुछ नहीं मिला। बीयर का पीपा नदारद था, और उसके जिगरी दोस्त भी कहीं नहीं थे। वह शैतान पर चिल्लाया कि क्या हुआ? कल यह स्थान अद्भुत था। शैतान ने जवाब दिया, "कल हम प्रचार अभियान चला रहे थे, आज आप ने वोट डाल दिया है।''■

सुनिए, दूरसंचार की गाथा

✍ अरुण जेटली

भारत का दूरसंचार क्षेत्र आर्थिक सफलता का 'झरोखा' है। जब सरकार ने 1994-95 में निजी (प्राइवेट) क्षेत्र के लिए इस क्षेत्र को खोला तो दूरसंचार के नियंत्रण को निजी हाथों में सौंपे जाने के बारे में अनेक संशय बने हुए थे। कुछ ही वर्षों में प्रत्येक आलोचक गलत सिद्ध हुआ। सार्वजनिक क्षेत्र के एकाधिकार ने इस क्षेत्र के विकास की गति को बड़ा धीमा कर दिया था। निजी क्षेत्र का द्वार खोले जाने के समय भारत की दूरसंचार-घनता 0.8 प्रतिशत थी। मोबाइल टेलीफोन के बारे मे जिस प्रकार की धारणा सर्व प्रचलित हो रही थी, उसके विपरीत मोबाइल आम आदमी और कमजोर वर्ग के लोगों के लिए वरदान सिद्ध हुआ। इससे भारत की दूरसंचार-घनता में अत्यधिक सुधार हुआ। प्रतीक्षा सूची की बात तो इतिहास बनकर रह गई। लागत में भारी कमी आई। लाइनमैंनों की जरूरत ही नहीं रही। अधिकांश भारतीय बेहतर ढंग से एक दूसरे से जुड़ सके।

प्रारम्भिक अवस्था में जरूर कुछ गलतियां हुई- हालांकि ऐसा ईमानदारी से हुआ। लाइसेंस फीस व्यवस्था से केवल महंगी टेलीफोनी बनी। एनडीए सरकार द्वारा तैयार की गई राष्ट्रीय दूरसंचार नीति 1999 से इन गलतियों को सुधारा गया। राजस्व की भागीदारी की तरफ बढ़ कर आपरेटरों के लिए लागत कम हुई और मात्रा में भारी बढ़ोतरी हुई। बढ़ी हुई और उपभोक्ताओं को सस्ती सेवाओं का लाभ मिला। टेक्नॉलाजी की शुरूआत से आधारभूत टेलीफोनी, सीमित मोबिलिटी और पूर्ण मोबिलिटी के बीच एकाकार रूप ग्रहण किया। इससे यूनीवर्सल एक्सेस लाइसेंस की स्थापना हो सकी जो आधारभूत और मोबइल सेवाओं दोनों के बीच समान रहीं।

दूरसंचार आर्थिक सुधारों की सफलता का अत्यंत दृश्यमान चेहरा बन कर चमका। इससे निवेश को आकर्षित किया तो साथ ही रोजगार में वृद्धि तथा भारत विश्व में सस्ती सेवा प्रदान कराने वाला सबसे तेज विकसित करने वाली टेलीकॉम-अर्थव्यवस्था बनकर उभरा।

भारत का दूरसंचार क्षेत्र आर्थिक सफलता का 'झरोखा' है। जब सरकार ने 1994-95 में निजी (प्राइवेट) क्षेत्र के लिए इस क्षेत्र को खोला तो दूरसंचार के नियंत्रण को निजी हाथों में सौंपे जाने के बारे में अनेक संशय बने हुए थे। कुछ ही वर्षों में प्रत्येक आलोचक गलत सिद्ध हुआ। सार्वजनिक क्षेत्र के एकाधिकार ने इस क्षेत्र के विकास की गति को बड़ा धीमा कर दिया था।

यूपीए सरकार ने टेलीकॉम की इस सफल गाथा को 2004 में विरासत में प्राप्त किया और वह उसे और बेहतर बना सकती थी।

परंतु, अफसोस है कि पूरी की पूरी यह सफल गाथा, जो यूपीए ने विरासत में पाई थी, उसकी संपूर्ण प्रेरणा यूपीए ने लुप्त कर दी। हालांकि सेवाओं का पर्याप्त विस्तार हुआ, परन्तु अब स्पेक्ट्रम नीलामी लेने वाला कोई नहीं मिला। नए निवेशक इस क्षेत्र में झांकने में भी संकोच कर रहे हैं और जिन निवेशकों ने लाभ कमाने के बावजूद भी इस क्षेत्र में निवेश किया, उन्हें निश्चित ही उस पर्यावरण में काम करने पर खेद महसूस हो रहा होगा, जिनमें उन्हें काम करना पड़ रहा है। सफलता की यह गाथा कैसे विफलता की ओर चली गई?

प्रधानमंत्री ने प्रारम्भ में टेलीकॉम की जिम्मेदारी एक ऐसे मंत्री को सौंपी जो स्पष्ट अपने हितों के द्वंद्व में फंसकर रह गया। यूपीए के प्रथम टेलीकॉम मंत्री के खिलाफ आपराधिक मामले खोज-बीन में पड़े हुए हैं। जब इन मंत्री महोदय को हटाया गया तो उन्हीं की पार्टी 'डीएमके' के उत्तराधिकारी ने विभाग में और भी तबाही मचाकर रख दी। 2007-08 में स्पेक्ट्रम का आबंटन 2001 में नीलाम के मार्केट मेकेनिज्म द्वारा निश्चित दरों पर किया गया। यह क्षेत्र सात वर्षों में अत्यंत विस्तरित हुआ है और स्पेक्ट्रम के मूल्य पर्याप्त बढ़े हैं। यह चेतावनी दिए जाने के बावजूद भी कि आवंटन किए जाने के समय जो भी कीमत या इंडेक्सिंग के माध्यम से तय की जाए, उसे नए सिरे से तय किया जाए, फिर भी सरकार ने स्पेक्ट्रम के आबंटन की दरों का मार्केटिंग की कीमतों से कम दरों पर निर्धारित किया। आबंटन की पद्धति भी षंड्यंत्रपूर्ण थी। लक्ष्य पद्धति को भी बीच में ही बदल दिया गया। पहले आओ, पहले पाओ'

के सिद्धांत को उन लोगों के लिए बदल कर यह कर दिया कि जो लोग अन्य लोगों से पहले 'एंट्री फीस' दे देते हैं। यह सूचना अपने अत्यंत चहेते आवेदकों को पहले ही 'लीक' हो गई प्रतीत होती है। परिणामत: यह अत्यंत विनाशकारी रहा। सीएजी की रिपोर्ट ने सरकार के कामकाज की विश्वसनीयता से भरोसा उठा दिया। सीबीआई को चार्ज-शीट (आरोप पत्र) फाइल करना पड़ा जिसमें मंत्री, सिविल अधिकारी और निवेशक गिरफ्तार हुए। सुप्रीम कोर्ट ने लाइसेंसों को रद्द करने का असाधारण कदम उठाना पड़ा। आर्थिक सुधारों की सबसे बड़ी सफल गाथा अविस्मरणीय घोटालों का रूप लेकर सामने आ गई

अब टेलीकॉम विभाग का कामकाज देखने के लिए तीसरे मंत्री को नियुक्त किया गया। इन मंत्री महोदय को इस बात पर दूसरों को दु:ख पहुंचाकर मजा आने लगा कि यूपीए सरकार में टेलीकॉम क्षेत्र में घोटाले कोई नई बात नहीं हैं। अत:, उन्होंने एनडीए के घोटालों की 'जांच' करने के लिए अपनी मनमर्जी का एक जज चुना। जज की रिपोर्ट को सीबीआई को भेज दिया गया। अब सीबीआई ने कोर्ट में आरोप-पत्र दाखिल किया है। सीबीआई केस का प्रमुख तत्व 'स्पेक्ट्रम यूजर्स चार्जेज' से है। जब सेवा का विस्तार होता है तो आपरेटरों को अतिरिक्त स्पेक्ट्रम की आवश्यकता होती है। एनटीपी 1999 के अंतर्गत अतिरिक्त स्पेक्ट्रम प्रभारों के राजस्व भागीदारी के लिए चुकता किया जाता है। 2001-02 में तैयार की गई नीति यह थी कि 4.4 एमएचजैड की प्रारम्भिक शुरूआती स्पेक्ट्रम पर 2 प्रतिशत का 'यूजर्स जार्ज' (उपभोक्ता प्रभार) देना होता था, 6.2 एमएचजैड से 10 एमएसजैड के पूरे स्लैब को दो टुकड़ों में क्यों नहीं बनाया गया और 8 एमएचजैड तथा 10 एमएचजैड के बीच 1 प्रतिशत का अतिरिक्त प्रभार क्यों नहीं लिया गया?

स्पैक्ट्रम यूजर्स चार्जेज टैरिफ निर्धारण होता है। टैरिफ निर्धारण एक्जीक्यूटिव की पद्धति का अंश होता है। एक्जीक्यूटिव विभिन्न कारकों को ध्यान में रखते हुए उस समय विचार करती है और यह देखती है कि टैरिफ को बढ़ाने या घटाने या स्लैबों के आकार को तय करते हुए किस विशेष प्रकार का टैरिफ का प्रकार लेना होता है। ऐसी कोई वैज्ञानिक युक्तिसंगतता मौजुद नहीं है जिस पर ऐसा कुछ किया जा सकता है। टैरिफ की दरों को मार्केट के हालात पर वाणिज्यिक तौर पर निर्धारित किया जाता है। अन्तर्निहित विचार उस क्षेत्र को संवर्धन करने का रहता है। कोई भी प्रशासक महसूस कर सकता है कि कम टैरिफ दरों से लागत कम हो सकती है और मात्रा में वृद्धि हो सकती है और इस प्रकार उस क्षेत्र को तथा राजस्व दोनों में बढ़ोतरी हो सकती है। इस मामले में, स्लैबों का निर्धारण करते समय मूल आधारभूत तथा सीमित मोबिलिटी के बीच समता का ध्यान रख कर किया गया होगा। बाद में, ट्राई की रिपोर्टों में इस सिद्धांत को स्वीकार किया गया जिन पर यह टैरिफ निर्धारित किए गए। यदि टैरिफ निर्धारण को भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के खंडों को आधार बनाया जाता है, जिससे राजस्व की गलत ढंग से हानि होती है तो प्रत्येक वित्त मंत्री को, जो बजट में सीमा और उत्पाद शुल्क घटाता है, इस प्रकार के आरोप के घेरे में आना पड़ेगा।

सीबीआई आरोप-पत्र में, मेरे तत्कालीन सहयोगी श्री प्रमोद महाजन का नाम लेकर उन्हें टैरिफ निर्धारण में एक षड्यंत्रकारी बताया है। क्योंकि आज वह इस संसार में नहीं है, स्पष्ट है कि उन पर मुकदमा नहीं चल सकता है। तत्कालीन सरकार का सदस्य होने के नाते, मुझे आरोपों की जांच करने पर महसूस होता है कि उनके खिलाफ लगाए गए आरोप नितांत बेसिरपैर की हैं और निराधार हैं।

टेलीकॉम गाथा एक ऐसा मामला है जिसमें यूपीए सरकार और प्रधानमंत्री को बहुत कुछ आत्ममंथन करने की जरूरत है। क्योंकि वर्तमान सरकार ने टेलीकॉम गाथा की सफलता को विरासत में प्राप्त किया है तो ऐसी स्थिति में यूपीए द्वारा जिस प्रथम मंत्री को नियुक्त किया गया, उसके निजी हितों और इस क्षेत्र में द्वंद्व पाया गया है। उसके उत्तराधिकारी भी अपने ही छल-कपट में फंस कर रह गए। तीसरे मंत्री ने आकर एनडीए को सबक सिखाने का प्रण ले लिया। ऐसे में पूर्व सिविल अधिकारी और निवेशक उनका शिकार बनकर रह गए। इस प्रक्रिया में दूरसंचार क्षेत्र और भी खराब हुआ और अस्थिरता पैदा हुई है। ■

(लेखक राज्य सभा में विपक्ष के नेता हैं)

टेलीकॉम गाथा एक ऐसा मामला है जिसमें यूपीए सरकार और प्रधानमंत्री को बहुत कुछ आत्ममंथन करने की जरूरत है। क्योंकि वर्तमान सरकार ने टेलीकॉम गाथा की सफलता को विरासत में प्राप्त किया है तो ऐसी स्थिति में यूपीए द्वारा जिस प्रथम मंत्री को नियुक्त किया गया, उसके निजी हितों और इस क्षेत्र में द्वंद्व पाया गया है। उसके उत्तराधिकारी भी अपने ही छल-कपट में फंस कर रह गए। तीसरे मंत्री ने आकर एनडीए को सबक सिखाने का प्रण ले लिया। इस प्रक्रिया में दूरसंचार क्षेत्र और भी खराब हुआ और अस्थिरता पैदा हुई है।

भाजपा के नवनियुक्त राष्ट्रीय पदाधिकारी

राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री राजनाथ सिंह : 1975 में भारतीय जनसंघ, मिर्जापुर के जिलाध्यक्ष। 1977 में विधायक निर्वाचिता। 1983 में उप्र भाजपा के सचिव। 1984 में उप्र युवा मोर्चा अध्यक्ष। 1986 में भाजयुमो के राष्ट्रीय महामंत्री। 1988 में भाजयुमो के राष्ट्रीय अध्यक्ष। 1988 में विधान परिषद् सदस्य। 1991 में उप्र में शिक्षामंत्री। 1994 में राज्यसभा सदस्य। 1997 में उप्र भाजपा के अध्यक्ष। 1999 में एनडीए शासन में भूतल परिवहन मंत्री। 2000 में उप्र के मुख्यमंत्री। 2002 में भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री। 2003 में एनडीए शासन में कृषि मंत्री। 2004 में भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री। 2005-2009 तक भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष। 2013 में पुन: भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने।

उपाध्यक्ष

डी.वी. सदानंद गौड़ा

कर्नाटक प्रदेश भाजपा के पूर्व अध्यक्ष एवं कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री।

मुख्तार अब्बास नकवी

मूलत: उत्तर प्रदेश के रहने वाले। भाजपा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पद पर पुन: नियुक्ति।

सी.पी. ठाकुर

बिहार प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष रहे। एनडीए शासन में केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री रहे।

जुएल ओराम

उड़ीसा प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष रहे। एनडीए शासन में केन्द्रीय जनजातीय मामलों के मंत्री रहे।

एस.एस. अहलूवालिया

राज्यसभा में भाजपा के उपनेता रहे।

बलबीर पुंज

जाने-माने स्तंभकार। आईआईएमसी एवं राष्ट्रीय युवा आयोग के चेयरमैन रहे।

सत्यपाल मलिक

भारतीय जनता पार्टी, किसान मोर्चा के राष्ट्रीय प्रभारी रहे।

प्रभात झा

भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय सचिव। मप्र भाजपा के अध्यक्ष रहे। राज्यसभा सदस्य। वर्तमान में "Kamal Sandesh" अंग्रेजी तथा 'कमल संदेश' (हिंदी) के संपादक।

उमा भारती

भाजयुमो की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष। मध्य प्रदेश की मुख्यमंत्री रहीं। एनडीए शासन में केन्द्रीय मंत्री रहीं। उत्तर प्रदेश विधानसभा की सदस्य।

विजया चक्रवर्ती

गुवाहाटी से लोकसभा सदस्य रहीं। एनडीए शासन में केन्द्रीय राज्य जलसंसाधन मंत्री रहीं।

लक्ष्मीकांता चावला

जानी-मानी स्तंभकार। पंजाब सरकार में केन्द्रीय मंत्री रहीं।

किरण माहेश्वरी

भारतीय जनता पार्टी, महिला मोर्चा की अध्यक्षा रहीं। भाजपा की राष्ट्रीय महामंत्री रहीं। राजस्थान विधानसभा सदस्य।

स्मृति ईरानी

भारतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा की अध्यक्षा रहीं। राज्यसभा सांसद।

महामंत्री

अनंत कुमार

एनडीए शासन में केन्द्रीय नागरिक उड्डयन, पर्यटन, खेल एवं युवा, संस्कृति, शहरी विकास एवं गरीबी उन्मूलन मंत्री रहे। लोकसभा सदस्य।

थावरचंद गहलोत

भाजपा ससंदीय बोर्ड के सदस्य। राज्यसभा सदस्य।

जगत प्रकाश नड्डा

भाजयुमो के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे। हिमाचल प्रदेश सरकार में मंत्री रहे। राज्यसभा सदस्य।

धर्मेन्द्र प्रधान

भाजयुमो के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे। ओडिशा से विधायक एवं लोकसभा सदस्य रहे। वर्तमान में राज्यसभा सदस्य।

तापिर गाव

मूलत: अरूणाचल प्रदेश से। अरूणाचल पूर्व क्षेत्र से लोकसभा सांसद रहे।

अमित शाह

गुजरात भाजपा सरकार में मंत्री रहे।

वरुण गांधी

लोकसभा सदस्य। भाजपा के राष्ट्रीय सचिव रहे।

राजीव प्रताप रूडी

बिहार विधानसभा के सदस्य रहे। लोकसभा सदस्य रहे। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता रहे।

मुरलीधर राव

मूलत: आंध्र प्रदेश से अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के पूर्णकालिक कार्यकर्ता रहे। स्वदेशी जागरण मंच के संयोजक रहे।

रामलाल

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक। राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन) पद पर पुन: नियुक्त।

वी. सतीश

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के क्षेत्रीय संगठन मंत्री रहे। राष्ट्रीय सह महामंत्री (संगठन) पद पर पुन: नियुक्त।

सौदान सिंह

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक। राष्ट्रीय सह महामंत्री (संगठन) पद पर पुन: नियुक्त।

कोषाध्यक्ष

पीयूष गोयल

मूलत: महाराष्ट्र से। केन्द्रीय कोषाध्यक्ष पद पर पुन: नियुक्त

सचिव

श्याम जाजू

भाजपा केन्द्रीय मुख्यालय के प्रभारी रहे। राष्ट्रीय सचिव पद पर पुन: नियुक्त।

भूपेन्द्र यादव

अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री रहे। भाजपा राष्ट्रीय सचिव पद पर पुन: नियुक्त।

पी.के. कृष्णदास

मूलत: केरल से। केरल प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष रहे।

डॉ. अनिल जैन

वरिष्ठ चिकित्सक। भाजपा जम्मू-कश्मीर के सह प्रभारी रहे।

विनोद पांडेय

मूलत: उत्तर प्रदेश से। भाजपा किसान मोर्चा के राष्ट्रीय संयोजक रहे।

त्रिवेन्द्र सिंह रावत

मूलत: उत्तराखंड के रहनेवाले हैं। उत्तराखंड भाजपा सरकार में मंत्री रहे।

रामेश्वर चौरसिया

भाजपा दिल्ली प्रदेश के सहप्रभारी रहे। बिहार विधानसभा के सदस्य।

आरती मेहरा

दिल्ली नगर निगम की महापौर रहीं। भाजपा राष्ट्रीय सचिव पद पर पुन: नियुक्त।

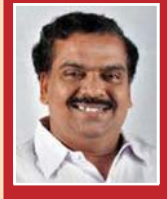

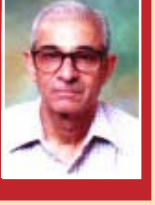

रेणु कुशवाहा

मूलत: बिहार से। भाजपा राष्ट्रीय सचिव पद पर नियुक्त।

सुधा यादव

मूलत: हरियाणा से। भाजपा राष्ट्रीय सचिव पद पर नियुक्त।

सुधा मलैया

मूलत: मध्य प्रदेश से। भाजपा राष्ट्रीय सचिव पद पर नियुक्ति

पूनम महाजन

मूलत: महाराष्ट्र से। भाजयुमो की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रही। भाजपा राष्ट्रीय सचिव पर नियुक्त।

लुईस मरांडी

मूलत: झारखंड से। भाजपा राष्ट्रीय सचिव पद पर नियुक्त।

डॉ. तमिल इसई

मूलत: तमिलनाडू से। भाजपा राष्ट्रीय सचिव पद पर नियुक्त

वाणी त्रिपाठी

मूलत: दिल्ली से। भाजपा राष्ट्रीय सचिव पद पर पुन: नियुक्त।

मुख्यालय प्रभारी

ओम प्रकाश कोहली

दिल्ली प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष रहे। भाजपा मुख्यालय प्रभारी पद पर पुन: नियुक्त।

संसदीय दल कार्यालय

डॉ. रामकृपाल सिन्हा

पूर्व सांसद एवं पूर्व केन्द्रीय राज्यमंत्री। भाजपा संसदीय दल कार्यालय सचिव पद पर पुन: नियुक्त।

षण्मुखनाथन

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अधिकारी रहे। भाजपा संसदीय दल कार्यालय सह सचिव पद पर पुन: नियुक्त।

प्रवक्ता

प्रकाश जावडेकर

मूलत: महाराष्ट्र से। राज्यसभा सदस्य। भाजपा राष्ट्रीय प्रवक्ता पद पर पुन: नियुक्त।

शाहनवाज हुसैन

मूलत: बिहार से। एनडीए शासन में केन्द्रीय मंत्री रहे। भाजपा राष्ट्रीय प्रवक्ता पद पर पुन: नियुक्त। भागलपुर से लोकसभा सदस्य।

निर्मला सीतारमण

मूलत: आंध्र प्रदेश से। भाजपा राष्ट्रीय प्रवक्ता पद पर पुन: नियुक्त।

डॉ. विजय सोनकर शास्त्री

मूलत: उत्तर प्रदेश से। भाजपा राष्ट्रीय प्रवक्ता पद पर नियुक्त।

डॉ. सुधांशु त्रिवेदी

मूलत: उत्तर प्रदेश से। भाजपा राष्ट्रीय प्रवक्ता पद पर नियुक्त।

मीनाक्षी लेखी

मूलत: दिल्ली से। अधिवक्ता। भाजपा राष्ट्रीय प्रवक्ता पद पर नियुक्त।

कैप्टन अभिमन्यु

मूलत: हरियाणा से। भाजपा राष्ट्रीय सचिव रहे। भाजपा राष्ट्रीय प्रवक्ता पद पर नियुक्त।■

भाजपा जम्मू-कश्मीर के पूर्व अध्यक्ष श्री दया कृष्ण कोतवाल नहीं रहे

भारतीय जनता पार्टी जम्मू कश्मीर के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष श्री दया कृष्ण कोतवाल जी का 9 अप्रैल को दिल्ली में असामयिक निधन हो गया। स्वर्गीय श्री दया कृष्ण कोतवाल भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता थे। उन्होंने कठिन परिश्रम और मेहनत कर अपना पूरा जीवन संगठन के विस्तार के लिए समर्पित कर दिया।

माननीय श्री लालकृष्ण आडवाणी जी ने शोक व्यक्त करते हुए कहा कि स्वर्गीय कोतवाल जी जनसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पं. प्रेमनाथ डोगरा जी के समय से ही संगठन कार्य में सक्रिय थे। डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी द्वारा जम्मू-कश्मीर के एकीकरण के प्रयास के लिए चलाए जा रहे अभियानों में श्री कोतवाल जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा। उनका असामयिक निधन जम्मू-कश्मीर के भाजपा कार्यकर्ताओं तथा वहां की जनता के लिए अपूरणीय क्षति है। भारत की एकता-अखंडता के लिए उनका योगदान हमेशा स्मरण किया जाता रहेगा। उनके पार्थिव शरीर को श्रद्धांजलि देने भाजपा के वरिष्ठ नेता श्री लाल कृष्ण आडवाणी जी, संगठन महामंत्री श्री रामलाल जी, राष्ट्रीय महामंत्री श्री जे पी नड्डा सहित कई कार्यकर्ता अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान पहुंचे। वहीं, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह जी, लोकसभा में प्रतिपक्ष के नेता श्रीमती सुषमा स्वराज जी, राज्यसभा में प्रतिपक्ष के नेता श्री अरुण जेटली जी आदि अन्य वरिष्ठ नेताओं ने शोक-संतप्त परिवार से दूरभाष पर वार्ता कर अपनी संवेदना प्रकट कर सांत्वना दी।■

सूखा प्रभावित क्षेत्रों के किसानों के कर्ज पूरी तरह माफ हो

– संवाददाता द्वारा

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह मध्य महाराष्ट्र के सूखा प्रभावित इलाकों के दो दिवसीय दौरे पर 1 अप्रैल 2013 को औरंगाबाद पहुंचे। औरंगाबाद जिले से अपनी यात्रा शुरु करते हुए श्री सिंह ने किसानों और अन्य स्थानीय लोगों से मुलाकात की जिन्होंने उन्हें क्षेत्र में सूखे

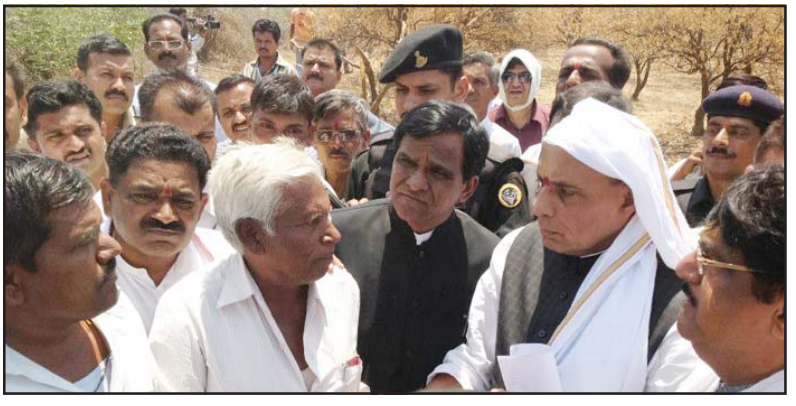

की बिगड़ती स्थिति से अवगत कराया। छड़ा चावनी और पिम्परी में किसानों को संबोधित करते हुए श्री सिंह ने कहा, ''सूखा प्रभावित इलाकों में रह रहे किसानों को खेती में गंभीर संकट का सामना करना पड़ रहा है। सूखे ने महाराष्ट्र के 11000 से ज्यादा गांवों और करीब 3500 से ज्यादा गांवों में 50 प्रतिशत फसलों को नुकसान पहुंचाया है।''

सूखा प्रभावित इलाकों में रह रहे किसानों के कर्ज पूरी तरह माफ करने की मांग करते हुए भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि किसानों को कम से कम दो वर्षों के लिए सब्सिडीयुक्त बीज, खाद और ड्रिप सिंचाई प्रणाली पर शत प्रतिशत सब्सिडी दी जानी चाहिए। ''किसानों को ब्याजमुक्त कृषि ऋण दिया जाना चाहिए और पशुओं के लिए पर्याप्त मात्रा में चारा सप्लाई किया जाना चाहिए।''

केन्द्र द्वारा घोषित सूखा राहत पैकेज को अपर्याप्त बताते हुए श्री सिंह ने कहा, ''केन्द्र सरकार द्वारा घोषित 1200 करोड़ रुपये की सहायता काफी नहीं है क्योंकि राज्य सरकार ने सूखा राहत के लिए खुद करीब 1800 करोड़ रुपये की मांग की थी। सरकार को सूखा राहत की राशि बढ़ानी चाहिए और इसके कार्यान्वयन पर निगरानी रखने के लिए एक केन्द्रीय निगरानी दल गठित करना चाहिए। सिंचाई परियोजनाओं में भारी भ्रष्टाचार के लिए राज्य सरकार को दोषी ठहराते हुए श्री सिंह ने कहा, ''अनेक महत्वाकांक्षी सिंचाई परियोजनाओं के कार्यान्वयन में 70000 करोड़ रुपये का भ्रष्टाचार हुआ और तब भी पिछले दस वर्षों में राज्य के कुल सिंचाई क्षेत्र में केवल 0.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।''

सूखा प्रभावित इलाकों में रह रहे किसानों के कर्ज पूरी तरह माफ करने की मांग करते हुए भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि किसानों को कम से कम दो वर्षों के लिए सब्सिडीयुक्त बीज, खाद और ड्रिप सिंचाई प्रणाली पर शत प्रतिशत सब्सिडी दी जानी चाहिए। ''किसानों को ब्याजमुक्त कृषि ऋण दिया जाना चाहिए और पशुओं के लिए पर्याप्त मात्रा में चारा सप्लाई किया जाना चाहिए।''

सूखा प्रभावित इलाकों में भूमिगत जल स्तर में गिरावट पर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा, ''हांलाकि सरकार ने महाराष्ट्र जल संसाधन नियामक प्राधिकरण अधिनियम बनाया है लेकिन वह बहुमूल्य पानी का दुरुपयोग नहीं रोक सकी है। बहुमूल्य पानी आम आदमी और किसानों को तो नहीं मिल रहा है और अवांछित तत्व उसका लाभ उठा रहे हैं। अत: जल संबंधी अधिनियम में तत्काल संशोधन करने की जरुरत है ताकि पानी का दुरुपयोग रोका जा सके।''

उन्होंने कहा, ''सूखे ने गावों के गरीब लोगों और किसानों का रोजगार खत्म कर दिया है और बड़ी संख्या में लोग गांवों से शहरों की तरफ पलायन कर रहे हैं। सरकार को मनरेगा का विस्तार करके इस समस्या का समाधान करना चाहिए और इसे कृषि के साथ जोड़ना चाहिए। श्री सिंह ने किसानों को आश्वासन दिया कि महाराष्ट्र में सूखे का मुद्दा संसद के दोनों सदनों में जोरदार ढंग से उठाया जाएगा। ■

यमुना 'रायबरेली' से गुजरती तो ये हालत न होती : सुषमा स्वराज

गत 11 मार्च 2013 को लोकसभा में विपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज ने 'यमुना नदी में प्रदूषण' के मुद्दे पर सदन का ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा कि यमुना हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। यह हमारी आस्था का प्रतीक है। यमुना में प्रदूषण चिंताजनक है। तात्कालिक उपाय है कि सरकार हथिनी कुंड बैराज से तुरंत जल छोड़ने का निर्णय दे ताकि यमुना जी का नदी जल प्रवाह बढ़े और उनका प्रदूषण भी कम हो। हम यहां उनके भाषण का संपादित पाठ प्रकाशित कर रहे हैं:-

अध्यक्ष महोदया, गंगा जी और यमुना जी को हम गंगा मैया और यमुना मैया कहकर सम्बोधित करते हैं। क्योंकि हमारे लिए ये नदियां नहीं बल्कि मां हैं। आप जानती हैं कि हिंदुस्तानी तहजीब को गंगा-जमुनी तहजीब कहा जाता है। हमारे राष्ट्रीय गान में विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा कहकर हम दिन-रात इनकी स्तुति करते हैं। कृष्ण उपासक जब ब्रज क्षेत्र की कल्पना करते हैं तो उसमें उन्हें यमुना कल-कल बहती हुई दिखाई देती है। लेकिन अत्यंत दुख की बात है कि उसी ब्रज क्षेत्र के मथुरा, वृन्दावन में यमुना लगभग सूख गई हैं और दिल्ली में यमुना जी भयंकर रूप से प्रदूषित हो गई है और यही प्रदूषित जल जब मथुरा, वृन्दावन में जाता है तो न आचमन के योग्य रहता है और न स्नान करने के योग्य रहता है। ब्रिज क्षेत्र के सभी मंदिरों के ठाकुर जी को इसी प्रदूषित जल से स्नान कराने के लिए पुजारी मजबूर हो गये हैं। हालांकि बहुत बार यह विषय सरकार के नोटिस में लाया गया, बहुत बार आश्वासन दिये गये और एक बड़ी योजना भी बनी, हजारों करोड़ रुपये की योजना यमुना एक्शन प्लान भी बनी। लेकिन कोई नतीजा आज तक नहीं निकला। वही जैसे कहते हैं कि ढाक के तीन पात। इस सबसे आहत और आक्रोशित होकर यमुना मुक्तिकरण पदयात्रा ब्रज क्षेत्र से चली है। यह आज दिल्ली पहुंच रही है। सोनिया जी यहां बैठी हैं। आठ फरवरी को सोनिया जी से वे मिलने के लिए आये थे और मेरे मुताबिक शायद उन्होंने स्वयं बुलवाया था। लेकिन उनके आश्वासन के बाद भी कोई ठोस कार्रवाई अब तक उस पर नहीं हुई है।

> ***ऐसा नहीं है कि सूखी हुई नदियों को सराबोर नहीं किया जा सकता। गुजरात में साबरमती का उदाहरण हमारे सामने है। मध्य प्रदेश में नर्मदा और क्षिप्रा का उदाहरण हमारे सामने है।***

महोदया, ऐसा नहीं है कि सूखी हुई नदियों को सराबोर नहीं किया जा सकता। गुजरात में साबरमती का उदाहरण हमारे सामने है। मध्य प्रदेश में नर्मदा और क्षिप्रा का उदाहरण हमारे सामने है। साबरमती नदी अहमदाबाद में बिल्कुल सूख गई थी। हम जब अहमदाबाद जाते थे तो बिल्कुल दरारें दिखाई पड़ती थीं। लेकिन नर्मदा का जल साबरमती में डालने से साबरमती अब लबालब भरकर चल रही है। अभी एक अभिनव योजना मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री ने क्षिप्रा में नर्मदा नदी को जोड़ने की शुरू की है। एक साल के अंदर वह प्रयास पूरा हो जायेगा और जो सिंहस्थ कुंभ उज्जैन में होने वाला है, हम देखेंगे कि किस तरह से क्षिप्रा नदी बहकर चल रही है। लेकिन क्या कारण है कि न तो यमुना का जल प्रवाह बढ रहा है और न उसका प्रदूषण कम हो रहा है। इसलिए मैं आपकी अनुमति से यह विषय यहां उठाना चाहती हूं।

हम लोग यह चाहते हैं कि सरकार इस पर उत्तर दे, सरकार इस पर आश्वासन दे। क्योंकि मैं कहना चाहती हूं कि ये हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं।

ये हमारी आस्था का प्रतीक है। 1380 वर्ग किलोमीटर का यमुना जी का जो दायरा है, उसमें वह पीने का जल देती हैं। लाखों हैक्टेयर खेती की सिंचाई करते हुए, हमें भोजन देती हैं। इसलिए वे हमारी जीवनदात्री हैं। चाहिए तो यह था कि इस तरह के कर्त्तव्य सरकार स्वयं अपने हाथ में ले। लेकिन जब सामाजिक कार्यकर्त्ता उठ खड़े हुए हैं, देश के नागरिक उन्हें समझा रहे हैं, तब उसके बाद तो सरकार को

और भी ज्यादा आगे बढ क़र इस पर कार्यवाही करनी चाहिए। इसलिए मैं कहना चाहती हूँ कि एक तात्कालिक उपाय है और एक दीर्घकालिक उपाय है। तात्कालिक उपाय है कि सरकार हथिनी कुंड बैराज से तुरंत जल छोड़ने का निर्णय दे ताकि यमुना जी का नदी जल प्रवाह बढ़े और उनका प्रदूषण भी थोड़ा कम हो। लेकिन दीर्घकालीन उपाय भी हमें चाहिए। इसलिए मैं आपके माध्यम से आज सरकार से यह कहना चाहती हूँ कि संबंधित मंत्री भी यहां बैठी हैं, जो प्रदूषण मुक्त कर सकती हैं, श्रीमती जयंती नटराजन जी, यूपीए की चेयरपर्सन भी बैठी हैं, जो सबसे शक्तिशाली नेत्री हैं, जो वे कह दें, सरकार में सो हो जाए। अभी हम कह रहे थे, आज हम दोनों एक दूसरे को इशारा कर रहे थे कि जो मंत्री खड़े होते हैं, वे रायबरेली के बारे में कहते हैं। मैं कह रही थी कि विदिशा को कुछ नहीं, सासाराम को नहीं, सब कुछ रायबरेली को अगर यमुना जी रायबरेली से निकल रही होतीं तो ज़रूर उसमें भी प्रदूषण मुक्त हो जाता और जलप्रवाह हो जाता। दिक्कत यह है कि यमुना जी रायबरेली से नहीं बह रही हैं। वे बेचारी बृज में, मथुरा-वृंदावन में सूख जा रही हैं। वे वहीं सूख जा रही हैं। मैं तो बृज की बेटी हूँ इसलिए मेरे लिए तो यह व्यक्तिगत रूप से बहुत दुख का कारण है कि यमुना जी सूख गई हैं।

अध्यक्ष जी, मैं आपसे कहना चाहती हूँ कि हमें उत्तर भी चाहिए और आश्वासन भी चाहिए। लेकिन उत्तर ऐसा चाहिए जो उन पदयात्रियों का भी समाधान करे और उत्तर ऐसा भी चाहिए जो सदन में बैठे हम सब का समाधान करे। इसलिए मैं चाहती हूँ कि मंत्री महोदय स्वयं खड़े हों और हमें आश्वस्त करें कि तात्कालिक उपाय भी तुरंत करेंगे और दीर्घकालिक उपाय भी यमुना जी के बारे में करेंगे।■

'यमराज' का जवाब 2014 में मिलेगा : राजनाथ सिंह

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने भाजपा के 33वें स्थापना दिवस पर 6 अप्रैल को अहमदाबाद में पार्टी कार्यकर्ताओं की विशाल सभा को संबोधित करते हुए कहा कि नरेंद्र मोदी बेहद लोकप्रिय नेता हैं। उन्होंने श्री मोदी की यमराज से तुलना किए जाने के लिए कांग्रेस की आलोचना की। उन्होंने कहा कि यमराज का जवाब जनता 2014 के आम चुनाव में देगी। गुजरात में श्री मोदी की लगातार तीसरी बार जीत की प्रशंसा करते हुए भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि वह दुनिया के सामने गुजरात के विकास का मॉडल सामने लेकर आए हैं। सिर्फ एक साम्प्रदायिक दंगे के कारण उन्हें निशाना बनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस मुख्यमंत्रियों के शासनकाल में काफी साम्प्रदायिक दंगे हुए लेकिन इनके बारे में कोई कुछ नहीं कह रहा है।

इस अवसर पर गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने राहुल गांधी के उस बयान को आड़े हाथों लिया जिसमें उन्होंने भारत को मधुमक्खी के छत्ते की तरह बताया था। श्री मोदी ने साथ ही उन्हें 'यमराज' बताए जाने पर कहा कि इसका जवाब 2014 में दिया जाएगा। श्री नरेंद्र मोदी ने कहा, 'यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि कांग्रेस के सीनियर नेता ने देश को मधुमक्खी का छत्ता बताया। हमारे लिए देश मां है। हम देश को हर हाल में पहले रखते हैं।' श्री मोदी ने कहा कि कांग्रेस वंशज को भारतीय संस्कृति से बहुत लगाव नहीं है। उन्होंने कहा, 'यदि आप देश की भाषा और संस्कृति को नहीं समझते हैं तो उन बातों को कहने से बचने की जरूरत है जिनसे मातृभूमि का अपमान होता है।'

कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए श्री मोदी ने कांग्रेस की तरफ से 'यमराज' कहे जाने पर कहा कि भाजपा का अपमान उसके हित में जाता है। उन्होंने कहा कि जितना कीचड़ उछालोगे कमल उतना ही खिलेगा। 2007 में मुझे मौत का सौदागर कहा गया और जनता तब से चुनाव में कांग्रेस को जवाब देती आ रही है। श्री नरेंद्र मोदी ने इस मौके पर उस आलोचना का भी जवाब दिया जिसमें उन्हें पार्टी से बड़ा कहा जाता है। श्री मोदी ने कहा कि कोई बेटा अपनी मां से बड़ा नहीं हो सकता। भाजपा गुजरात में और ज्यादा मजबूत हुई है। और ऐसा किसी एक शख्स के दम पर नहीं हुआ है। ऐसा हमारे हजारों कार्यकर्ताओं के त्याग की वजह से है।■

बजट (सामान्य) 2013-14 पर चर्चा

अनाज सड़ रहा है और आदमी भूखा मर रहा है : डॉ. मुरली मनोहर जोशी

गत 13 मार्च 2013 को लोकसभा में आम बजट 2013-14 पर चर्चा की शुरूआत करते हुए भाजपा सांसद डॉ. मुरली मनोहर जोशी ने तथ्यों और तर्कों के आधार पर प्रभावशाली भाषण किया। हम इस भाषण का सारांश यहां प्रकाशित कर रहे हैं।

सरकार ने पिछले आठ-नौ सालों में अर्थव्यवस्था को बिल्कुल 1990 और 1991 की स्थिति में पहुंचा दिया। स्वयं प्रधान मंत्री जी ने यह कहा कि अर्थव्यवस्था अच्छी स्थिति में नहीं है और हम वर्ष 1990 से 1991 की तरफ जा रहे हैं। परिस्थितियों का तो रोना है कि हमारा निर्यात गड़बड़ा गया, हमारे यहां बजट का घाटा बढ़ता चला गया, मेल्टडाउन हुआ था, उसका हम पर प्रभाव पड़ गया। क्या जीडीपी का बढ़ जाना, वास्तव में लोगों के जीवन स्तर को सुधरा हुआ बताता है? यह केवल एक इंडैक्स हो सकता है लेकिन समग्र जीवन को जिसे आप समग्र और समावेशी विकास कहते हैं, उसका इसमें कहीं जिक्र नहीं होता है। इसलिए आपका आग्रह है जीडीपी ग्रोथ बढ़ाने पर है। इसमें ग्रोथ के साथ-साथ आपका अर्थ केवल जीडीपी निकलता है। जीडीपी के अलावा भी कोई ग्रोथ का इंडिकेटर है, मॉनिटर है, उसका इसमें कहीं उल्लेख नहीं है। इस ग्रोथ में रोजगार की वृद्धि, स्वास्थ्य में सुधार, शिक्षा का विकास शामिल नहीं है। यह केवल एक आंकड़ों का भ्रमजाल है। पूरे बजट में कहीं भी इसमें संस्कृति मूल्यों का उल्लेख नहीं है। अगर आपको विकास करना है तो घिसे-पिटे मॉडल पर जिसे आप वाशिंगटन कंसेसस कहीं, जी-20 फॉर्मूला कहें जी-8 फॉर्मूला कहें, से काम नहीं चलेगा। सरकार भारत के लोगों के साथ आम सहमति बनाए। यह केवल एक पार्टी का मामला नहीं है, यह सारे देश का सवाल है। यह एक सौ बीस करोड़ से अधिक लोगों के जीवन का सवाल है। एक नई चीज की जरूरत है, एक नई सोच की जरूरत है। देश के सामने नई चुनौतियां हैं। अपने फंडामेंटल्स को ठीक करने की कोशिश करें। हिन्दुस्तान में इसके अलावा ऐसे भी मॉडल्स हैं जहां हर गरीब आदमी का ख्याल किया गया है, जहां आदमी ही नहीं, आदमी के साथ काम करने वाले जानवरों का भी ख्याल किया गया है।

बजट का उद्देश्य और एक वित्त मंत्री का दायित्व आर्थिक स्पेस का निर्माण करना और सामाजिक-आर्थिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए संसाधनों का जुटाना है। लेकिन आप देखें कि इकोनोमिक स्पेस कहां से पैदा करें, कैसे पैदा करें और रिसोर्सेज कहां से आएं। इसके लिए मेरा पहला अनुरोध है कि आप सबसे पहले भारत को समझ लें। भारत का आर्थिक स्पेस कहां तक फैला हुआ है और आज कहां है, पहले इसे जानिए तभी आगे का स्पेस होगा। देश के वित्त मंत्री के नाते यह कल्पना करनी चाहिए कि 16वीं सदी में हमारा जो स्पेस था, उसे 2020 तक सवा या डेढ़ गुना ज्यादा करने की हमें हिम्मत करनी चाहिए लेकिन आप तो वहीं घूम रहे हैं। मेरी समझ में नहीं आता कि आप भारत की अर्थव्यवस्था को क्या दिशा देना चाहते हैं। देश को वित्त व्यवस्था की, अर्थव्यवस्था की, रिसोर्स की, मोबेलाइजेशन की ऊंचाइयों तक ले जाने की कोशिश कीजिए। एक अरब बीस करोड़ लोगों का देश, सारी समृद्धि से भरा हुआ, सारे टेलेंट से भरा हुआ देश, सारे पुरुषार्थ और ऊर्जा से भरा हुआ देश है, लेकिन आप उसे केवल सवा परसेंट, दो परसेंट पर नचा रहे हैं। आप वर्ष 1990-91 की तरफ देश को वापिस ले जा रहे हैं। यह कैसा बजट है, कैसी वित्त व्यवस्था है, कैसा चिंतन है, मुझे बहुत अफसोस है। सरकार द्वारा बजट में कहीं भी आर्थिक उद्देश्यों को नहीं बताया गया है। राष्ट्र के आर्थिक उद्देश्यों के संबंध में राष्ट्रीय सहमति होनी चाहिए और यह उद्देश्य विश्व के जीडीपी में भारत की भागीदारी को 24 प्रतिशत करने और साथ ही इस उद्देश्य को प्राप्त करने की होनी चाहिए कि इस देश में कोई भी व्यक्ति भूखा न रहे। विदेशी निवेश को एकमात्र आवश्यकता

के रूप में नहीं माना जाना चाहिए। देश की आंतरिक शक्ति को बढ़ाकर जरूरत के अनुसार उसके लिए रास्ता खोलना चाहिए। परन्तु आपकी आर्थिक नीतियों में अंर्तविरोध विद्यमान हैं। सरकार की प्राथमिकताएं और उद्देश्य स्पष्ट नहीं हैं। अध्ययन बताते हैं कि देश में बहुत सारा असंतोष और अनरेस्ट इसलिए विद्यमान है कि सरकार की विकास योजनाएं लोगों के जीवन को डिस्टर्ब कर रही हैं। सरकार ने स्वयं स्वीकारा है कि मुद्रास्फीति की दर अत्यंत उच्च स्तर पर बनी हुई है। अनाज का उचित भंडारण न किया जाना और उसके संबंध में स्पष्ट नीति का अभाव खाद्य स्फीति की दर को बढ़ाने का मुख्य कारण है। एक तरफ किसान मर रहा है, दूसरी तरफ अनाज सड़ रहा है और तीसरी तरफ आदमी भूखा मर रहा है। यह ठीक नहीं है। राजकोषीय घाटे को केवल आंकड़ों के हेरफेर के द्वारा कम किया गया है। विभिन्न मंत्रालयों के बजट में कटौती करके घाटे को कम करने की कोशिश की गयी है इस प्रकार की जुगाड़बाजी की आवश्यकता कतई नहीं है। इसके बाद सरकार कहती है कि शेडयुल्ड कास्ट्स और इन लोगों का आपने बहुत फेवर किया है। परन्तु केवल चंद भाग्यशील लोगों को ही इसका लाभ मिला है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में सरकार का कहना है कि आयुर्वेद, यूनानी और होम्योपैथी को इस क्षेत्र की मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया जा रहा है। मैं पूछना चाहता हूं कि क्या उक्त चिकित्सा पद्धतियां पहले से ही हमारी मुख्यधारा में नहीं हैं? यह कहने के स्थान पर कि उन्हें अधिक सामर्थ्यवान और उर्जावान पद्धतियां बनाया जायेगा, सरकार उन्हें मुख्यधारा में लाने की बात कर रही है। यह ठीक नहीं है। हमारी अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्र भारी रूप से ऋणग्रस्त हैं। चाहे वह दूरसंचार क्षेत्र हो या बैंक क्षेत्र की कुल और निष्पादनकारी आस्तियां हों, पूरा देश ही कर्जे के बोझ तले दबा पड़ा है। बैंकिंग क्षेत्र के द्वारा दिया गया अधिकांश ऋण केवल कुछ क्षेत्रों में अत्यंत अधिक है जो एक चिंताजनक स्थिति है। अमेरिका विकट सूखे का सामना कर रहा है और भारत हाल ही में कमजोर मानसून के दौर से गुजरा है। ऐसी स्थिति में सरकार किस तरह खाद्य स्फीति की दर को नियंत्रण में रख पायेगी? खाद्य स्फीति मुद्रा स्फीति का मुख्य घटक है।

एक तरफ किसान मर रहा है, दूसरी तरफ अनाज सड़ रहा है और तीसरी तरफ आदमी भूखा मर रहा है। यह ठीक नहीं है।

अर्थव्यवस्था में कृषि का योगदान पहले जीडीपी के 53 प्रतिशत की मुकाबले 13-14 प्रतिशत हो गया है। जॉब्स कहां हैं, मैन्युफैक्चरिंग में जॉब्स नहीं हैं, सिर्फ सर्विस सेक्टर में थोड़ी सी जॉब्स बढ़ी हैं। सरकार ने कहा था कि अगर हमारी 8 परसेंट ग्रोथ हो जायेगी तो हम एक करोड़ जॉब्स क्रिएट कर देंगे। परंतु 8 परसेंट ग्रोथ अगले साल कैसे होगी? यूरोपीयन इकोनॉमी पीछे हट रही है तो यह आपकी ग्रोथ कहां से होगी? आपने अपने दूसरे मार्केट्स तो अभी डेवलप नहीं किये। सवाल यह है कि अगर एक्सपोर्ट आपका बढ़े नहीं, इंटरनल रिसोर्सेज आपके बढ़ नहीं तो वृद्धि दर कैसे हासिल होगी। सरकार ने 12वीं पंचवर्षीय योजना में 55 लाख करोड़ रुपये के निवेश का लक्ष्य रखा है। इसका अर्थ है प्रतिवर्ष 11 लाख करोड़ रुपये की धनराशि की आवश्यकता होगी। ये 11 लाख करोड़ आप एक साल में कहां से लायेंगे। सरकार कहती है कि 47 परसेंट इसमें प्राइवेट शेयर होगा और बाकी इसमें पब्लिक शेयर होगा। 47 परसेंट जो इसका है वह 5 लाख 17 हजार करोड़ होगा, ये 5 लाख 17 हजार करोड़ आप इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए एक साल में कहां से लायेंगे। जब सरकार सड़क निर्माण की बात करती है तो देखने में यह आया है कि उसके द्वारा राज्यों को सड़क निर्माण के लिए आवंटन को कम कर दिया गया है। चूंकि यह चुनाव का साल है इसलिए सरकार द्वारा जितनी भी योजनाएं बनाई गई हैं वे सब मतदाताओं को जेब में डालने के लिए बनाई गई हैं। डायरेक्ट कैश ट्रांसफर योजना और गत में ऋण माफी योजना इसके उदाहरण हैं।

इस बात पर चर्चा होनी चाहिए कि निर्यात कैसे बढ़े और किस चीज का बढ़े। मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान या कौन सा ऐसा प्रदेश नहीं है, जहां की चीज आप बाहर नहीं भेज सकते है। यदि आप पर्यटन का विकास करें तो आपको बहुत पैसा मिल सकता है। बुनकरों के कल्याण के लिए कुछ नहीं किया गया है। सिल्क और मार्बल पर टैक्स बढ़ा दिया गया है। आप बार-बार कहते हैं कि लोग नहीं आ रहे हैं। लोग इसलिए नहीं आ रहे हैं क्योंकि आपकी नीतियां गलत हैं और शासन प्रणाली में कमी है। अच्छी तरह सुरक्षित और संरक्षित राष्ट्र में ही अर्थ शास्त्र और राज्य की चर्चा हो सकती है। लेखा परीक्षा प्रणाली का उल्लंघन मत कीजिए। कौटिल्य ने भी कठोर लेखा परीक्षा प्रणाली की चर्चा की थी। माननीय वित्त मंत्री महोदय विदेशी बुद्धिमत्ता और विदेशी धन पर बहुत अधिक निर्भर मत रहिए। भारत की आंतरिक शक्ति को जगाएं। यदि आप भारत की चेतना को जगाने का काम करते हैं तो जनता आपमें वैसा ही विश्वास व्यक्त करेगी जैसा कि लाल बहादुर शास्त्री जी और अटल बिहारी वाजपेयी में व्यक्त किया था। ■

बजट (सामान्य) 2013-14 पर चर्चा

यूपीए अपनी विफलता को छिपाने के लिए वैश्विक मंदी का सहारा ले रही है : वेंकैया नायडू

बजट 2013-14 पर 18 मार्च 2013 को राज्यसभा में चर्चा की शुरूआत करते हुए भाजपा सांसद श्री वेंकैया नायडू ने कहा कि इस बजट की नीति यह लगती है कि गरीब से लो और अमीर को दो। उन्होंने आक्रोश व्यक्त करते हुए कहा कि संप्रग सरकार ने आम आदमी को महंगाई और बढ़ती कीमतों का बड़ा तोहफा दिया है। हम यहां श्री नायडू के भाषण का सारांश प्रकाशित कर रहे हैं :-

इस बजट से समाज का एक भी वर्ग खुश नहीं है। इस बजट की नीति यह लगती है कि गरीब से लो और अमीर को दो। बजट में को भी बड़ा और साहसी कदम नहीं उठाया गया है। इस सरकार में एक वित्त मंत्री को प्रस्ताव करता है और दूसरा वित्त मंत्री उसका विरोध करता है। वित्त मंत्री के पूरे बजट भाषण में काले धन के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा गया है। बजट में दो महत्वपूर्ण मुद्दों की चर्चा नहीं की गई है। एक है - भ्रष्टाचार और दूसरा महंगाई। कुछ और ज्वलंत मुद्दे हैं जैसे धीमी विकास दर, बढ़ती हुई बेरोजगारी और कृषि संकट। वित्त मंत्री ने इन चुनौतियों का को उल्लेख नहीं किया।

इस बजट में यह स्पष्ट नहीं है कि 4.8 प्रतिशत के वित्तीय घाटे को किस तरह पूरा किया जाएगा। वित्त मंत्री ने बजट अनुमानों का पिछले वर्ष के बजट अनुमानों के साथ मिलान नहीं किया है। केन्द्रीय योजनागत परिव्यय में 2013-14 के लिए बजट अनुमान 5,55,322 करोड़ रुपये है। पहले यह चालू वर्ष के लिए 5,21,025 करोड़ रुपये था। चालू वर्ष के लिए संशोधित अनुमान 4,29,187 करोड़ रुपये है। यदि आप चालू वर्ष के संशोधित अनुमानों को पिछले वर्ष के बजट अनुमानों के साथ मिलाएं तो पाएंगे कि यह लगभग तीस प्रतिशत ज्यादा है। सरकार अब अपनी विफलताओं को छिपाने के लिए वैश्विक मंदी को एक दुश्मन के तौर पर प्रयोग कर रही है। अर्थव्यवस्था के कुप्रबंधन और लड़खड़ाती नीतियों के कारण ही वर्तमान स्थिति पैदा हुई है। अत्यधिक विपरीत बाह्य परिवेश के होते हुए भी अड़तालीस देशों ने भारत के मुकाबले ज्यादा विकास किया है। यदि वे देश तेजी से विकास कर सकते हैं तो भारत आगे क्यों नहीं बढ़ पायी? वर्तमान वर्ष के लिए 7.6 प्रतिशत विकास दर का लक्ष्य रखा गया था लेकिन हासिल केवल 5 प्रतिशत हो पायी है। मोर्गन स्टेनले और एचएसबीसी ने भारत की विकास दर को 2013-14 के लिए छह प्रतिशत आंका है। नौं प्रतिशत अथवा आठ प्रतिशत की विकास दर के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए को स्पष्ट योजना नहीं है। 'राजग' ने अपना कार्यकाल चार प्रतिशत की विकास दर के साथ शुरू किया था और 8.1 से 8.4 प्रतिशत तक पहुंच गया। इन्होंने आठ प्रतिशत से शुरू किया और गिरकर पांच प्रतिशत रह गया।

'राजग' सरकार ने बहुत सारे महत्वपूर्ण निर्णय लिए जैसे कि स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना, विद्युत अधिनियम को मजबूत बनाना आदि। 'संप्रग' सरकार ने आम आदमी को महंगा और बढ़ती कीमतों का बड़ा तोहफा दिया है। हर वस्तु के दाम आसमान छू रहे हैं। ■

इस बजट में यह स्पष्ट नहीं है कि 4.8 प्रतिशत के वित्तीय घाटे को किस तरह पूरा किया जाएगा। केन्द्रीय योजनागत परिव्यय में 2013-14 के लिए बजट अनुमान 5,55,322 करोड़ रुपये है। पहले यह चालू वर्ष के लिए 5,21,025 करोड़ रुपये था। चालू वर्ष के लिए संशोधित अनुमान 4,29,187 करोड़ रुपये है। यदि आप चालू वर्ष के संशोधित अनुमानों को पिछले वर्ष के बजट अनुमानों के साथ मिलाएं तो पाएंगे कि यह लगभग तीस प्रतिशत ज्यादा है। सरकार अब अपनी विफलताओं को छिपाने के लिए वैश्विक मंदी को एक दुश्मन के तौर पर प्रयोग कर रही है।

कर्नाटक विधानसभा चुनाव को लेकर सरगर्मी तेज

✍ राम प्रसाद त्रिपाठी

10 अप्रैल 2013 को भारत के निर्वाचन आयोग द्वारा चुनाव कार्यक्रम की तारीखें तय किए जाने की घोषणा के बाद कर्नाटक विधानसभा चुनाव का बिगुल बज उठा है। सांविधिक अधिसूचना जारी होने के बाद आयोग ने राज्य में विधानसभा की प्रक्रिया का शुभारंभ कर दिया है। अधिसूचना की तारीख से ही आदर्श आचार संहिता भी तुंरत लागू हो गई है। कार्यसूची के अनुसार, कर्नाटक में चुनाव एक ही चरण में 5 मई को होंगे।

कर्नाटक राज्य में कुल विधानसभा निवार्चन क्षेत्रों की संख्या 224 है और इसमें से 36 सीटें अनुसूचित जातियों तथा 15 सीटें अनुसूचित जन-जातियों के लिए आरक्षित हैं जैसा कि संसदीय तथा विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र आदेश 2008 के परिसीमन द्वारा तय की गई हैं। कर्नाटक चुनाव में सभी मतदान केंद्रों पर ईवीएम का उपयोग किया जाएगा और मतों की गिनती 8 मई को होगी। उल्लेखनीय है कि कर्नाटक विधानसभा का कार्यकाल 3 जून 2013 को समाप्त होने वाला है।

आयोग की अधिसूचना के अनुसार राज्य में सभी वर्तमान विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों की मतदाता सूचियां संशोधित की गई है जो 1 जनवरी 2013 के दिन तक शामिल है तथा इन्हें दो चरणों में (178 निर्वाचन क्षेत्रों के लिए 16.1.2013 को और 46 निर्वाचन क्षेत्रों के लिए 28.1.2013) प्रकाशित किया गया है। अंतिम मतदाता सूची के अनुसार राज्य में कुल मतदाताओं की संख्या 4,18,75,267 करोड़ हैं।

14वें कर्नाटक विधानसभा चुनावों में त्रिकोणीय चुनाव होने की संभावना है जिसमें सत्ताधारी पार्टी भाजपा, कांग्रेस और जेडी(यू) शामिल होंगे।

जहां तक वर्तमान विधान सभा रचना का संबंध है, वह 2008 में सत्तासीन से भिन्न है। कर्नाटक में 2004 के विधान सभा चुनावों के बाद कुछ राजनैतिक अस्थिरता देखने को मिली जिसमें खंडित निर्णय प्राप्त हुआ और अन्ततः तीन गठबंधन सरकारें गिरीं और उसके बाद लोगों ने भाजपा सरकार के पक्ष में मत देकर एक नए अध्याय का प्रारंभ किया। 2008 में 'भाजपा का कमल' पहली बार दक्षिण भारत में देखने को मिला। निर्दलीय विधायकों के समर्थन ने कार्यकाल के प्रारंभ में भाजपा सरकार को विधान सभा में और मजबूत किया। अब 14 विधायकों के बाहर निकल जाने के बाद पार्टी वर्तमान विधान सभा में साधारण बहुमत प्राप्त था। विधान सभा की वर्तमान प्रभावी संख्या है, भाजपा के 104 विधायक हैं और कांग्रेस तथा जेडीएस की संयुक्त संख्या 97 है एवं 7 निर्दलीय विधायक है।

इसी बीच भारतीय जनता पार्टी ने विधान सभा चुनावों के लिए उम्मीदवारों की अपनी प्रथम सूची जारी कर दी है। विपक्ष में बैठा कांग्रेस और जनता दल (एस) ने भी 5 अप्रैल को पहली सूची जारी कर दी है। जिन 224 निर्वाचन क्षेत्रों के लिए चुनाव होने वाला है, भाजपा की प्रथम सूची में 140 उम्मीदवारों के नाम है, जबकि कांग्रेस और जेडी(एस) के उम्मीदवारों की क्रमशः संख्या 177 और 122 है।

भाजपा की सूची को पार्टी की केन्द्रीय चुनाव समिति ने जारी किया है जिसमें सभी वरिष्ठ नेताओं और अधिकांशतः वर्तमान विधायकों के नाम शामिल हैं। सूत्रों के अनुसार, भाजपा की कोर समिति की बैठक 8 अप्रैल को होगी जिसमें शेष निर्वाचन क्षेत्रों के उम्मीदवारों के नामों को अंतिम रूप दिया जाएगा। भारी संख्या में आवेदकों की संख्या होने के कारण, विभिन्न निर्वाचन क्षेत्रों में उम्मीदवारों की प्रथम सूची को अंतिम रूप देने का कार्य अत्यंत कठिन रहा। सूत्रों के अनुसार कहीं-कहीं तो आवेदकों की संख्या 20

कर्नाटक विधान सभा के आम चुनावों की कार्य सूची प्रमुख तारीखें (दिन)

1. अधिसूचना जारी की तारीख- 10.4.2013 (बुधवार)
2. नामांकन की आखिरी तारीख- 17.4.2013 (बुधवार)
3. नामांकन पत्रों की जांच- 18.4.2013 (ब्रहस्पतिवार)
4. उम्मीदवारों द्वारा नाम वापस लेने की अंतिम तारीख- 20.4.2013 (शनिवार)
5. मतदान की जारीख- 5.5.2013 (रविवार)
6. मतों की गणना- 8.5.2013 (बुधवार)
7. तारीख जिसके पूर्व चुनाव सम्पन्न हो जाएगा- 11.5.2013 (शनिवार)
8. मत डालने का समय- प्रातः 7 बजे से सायं 5 बजे तक

को भी पार कर गई। इसके बाद, पार्टी ने जिला इकाइयों के साथ दो चरणों में परामर्श का कार्य किया और उनकी मदद से उम्मीदवारों का चयन किया गया। मुख्य प्रयोजन यही था कि जिला इकाइयों को भरोसे में लेकर चयन प्रक्रिया की जाए ताकि सर्वसम्मति से चयन निर्णय लिया जाए जिससे बाद में असहमति की संभावना को रोका जाए।

पहली सूची जारी करने के बाद मीडिया से बात करते हुए कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री श्री ईश्वरप्पा ने कहा कि ''लगभग सभी पार्टी विधायकों को सूची में शामिल किया गया। बाकी सीटों की दूसरी सूची तैयार की जा रही है और इसकी प्रक्रिया भी जल्द पूरी हो जाएगी। उन्होंने आगे कहा कि भाजपा का किसी अन्य पार्टियों के साथ कोई पूर्व-गठबंधन नहीं होगा और कार्यकर्ताओं से अनुरोध किया गया है कि वे पार्टी को आधारभूत जड़ों से संगठित कर फिर से पार्टी को सत्ता में वापस लाएं।''

राज्य में चुनाव अभियान की तेजी अभी शुरू नहीं हुई है। किन्तु सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी को दूसरी बार व्यापक विजय दिलाने के लिए 'विजय संकल्प यात्रा' की शुरूआत की है। इससे उत्तरी कर्नाटक क्षेत्र में संपूर्ण चुनाव अभियान की शुरूआत भी हो गई है। पार्टी के नए प्रदेशाध्यक्ष श्री प्रह्लाद जोशी, राष्ट्रीय महासचिव श्री अनंत कुमार (सांसद), मुख्यमंत्री श्री जगदीश शेट्टार, उप-मुख्य मंत्री श्री के.एस. ईश्वरप्पा और श्री आर. अशोक एवं सभी भाजपा मंत्रीगण तथा विधायकों ने भी इस यात्रा में भाग लिया।

यात्रा के प्रथम दिवस के बारे में मीडिया संवाददाताओं से बात करते हुए कर्नाटक कृषि मंत्री श्री उमेश वी. कट्टी ने कहा कि यात्रा का उद्देश्य पिछले पांच वर्षों में भाजपा सरकार की उपलब्धियों के बारे में लोगों को सूचित करना है, कार्यकर्ताओं में उत्साह भरना है और विधानसभा चुनावों में लोगों से भाजपा को वोट देने की अपील करना है। उन्होंने कहा कि भाजपा ने कई प्रकार वे विकास कार्य किए हैं और इसलिए इस यात्रा में लोगों का भरपूर समर्थन मिल रहा है। उन्होंने आगे बताया कि भाजपा भ्रष्टाचार को कतई बर्दाश्त नहीं करेगी और मंत्रियों तथा विधायकों के खिलाफ मामलों पर लोकायुक्त को और भी अधिक अधिकार सौंप कर भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई जारी रखेगी तथा मीडिया के दबाव में आकर नहीं झुकेगी।

इसी बीच, भाजपा ने कर्नाटक की अगली सरकार बनाने के का पूरा भरोसा है। विजय संकल्प यात्रा की शुरूआत पर कर्नाटक के मुख्यमंत्री श्री जगदीश शेट्टार ने केन्द्र में बैठी कांग्रेस-नीत यूपीए सरकार कर्नाटक के साथ 'सौतेला व्यवहार' करने का जोरदार प्रहार किया क्योंकि केन्द्र सरकार ने राज्य को विकास कार्य के लिए आवश्यक धन उपलब्ध नहीं कराया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (पीएमजीएसवाई) के लिए हाल के वर्षों में इस सरकार ने कर्नाटक को एक भी पैसा नहीं दिया। मैंने केन्द्र सरकार से धन जारी करने की अपील की परन्तु उसने जरा भी इस विषय पर कुछ नहीं किया। हमने तो उससे निर्माण कार्य के आवश्यक धन का 20 प्रतिशत अंशदान देने तक की बात कही, फिर भी केन्द्र ने हमारी कोई सहायता नहीं की। उन्होंने आगे कहा कि इसी बीच राज्य के प्रत्येक निर्वाचनक्षेत्र में 50 कि.मी. सड़क निर्माण के लिए सरकार ने धन उपलब्ध करा दिया है।

श्री शेट्टार ने केन्द्र सरकार पर 'कास्ट शेयरिंग बेसिस' अर्थात् 'लागत साझादारी आधार' पर स्वीकृत रेलवे परियोजनाओं में केन्द्र सरकार का सहयोग न देने का भी आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने सभी रेलवे परियोजनाओं पर अपने हिस्से का धन दे दिया है, परंतु कांग्रेस-नीत केन्द्र सरकार असाधारण विलम्ब किए चले जा रही है। मुख्यमंत्री ने फसल ऋणों पर 'शून्य' प्रतिशत और कृषि बजट, नए तालुकाओं का सृजन तथा नजुडप्पा समिति की सिफारिशों के कार्यान्वयन जैसे भाजपा सरकार के प्रमुख निर्णयों की बात भी लोगों के सामने रखी। अत:, उन्होंने कहा कि मुझे विश्वास है कि भाजपा को लोगों का समर्थन मिलेगा तथा कर्नाटक में अगली सरकार भाजपा की होगी।

आज के गर्मागर्म वातावरण में चुनाव-पंडितों की भविष्यवाणियों ने भी राज्य ने वातावरण को और गरमा दिया है। इनके अनुसार 57 विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों वाली बम्बई-कर्नाटक क्षेत्र ने पिछले चुनावों में भाजपा को सत्ता में

मई 2008 कर्नाटक विधानमंडल चुनाव परिणामों का सारांश

पार्टियों की सीटें	2004 सीटें	2008
भारतीय जनता पार्टी (भाजपा)	79	110
इंडियन नेशनल कांग्रेस	64	80
जनता दल (सेक्युलर)	58	28
अन्य	23	6
कुल	224	224

कर्नाटक चुनाव पर खर्च होंगे 200 करोड़ रुपए

बंगलौर में राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी श्री अनिल कुमार झा ने कहा है कि 5 मई को होने वाले कर्नाटक के राज्यविधान सभा चुनावों कराने पर 200 करोड़ रुपए का खर्च आएगा। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार इस पूरे खर्च का वहन करेगी। प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्र में मतदाता सूची में नामों के दर्ज करोन के संबंध में जागरूकता पैदा करने तथा व्यवस्थित रूप से मतदाता शिक्षा एवं चुनावी भागीदारी योजना (एसवीईईपी) के कार्य पर लगभग 2.5 लाख रुपए खर्च होने की संभावना है।

लाने में गहरी भूमिका निभाई थी, जिसमें इस क्षेत्र से भाजपा ने 38 विधायक चुने थे। इस बार, भाजपा इस क्षेत्र में संगठित है और कम से कम उसे 45 सीटें मिलने की संभावना है।

दूसरे, इन पंडितों का मानना है कि बेलगाम से भाजपा वरिष्ठ लिंगायत नेता तथा राज्य सभा के सदस्य श्री प्रभाकर कोरे की राष्ट्रीय कार्यसमिति में शामिल किया गया है। अत: लिगायतों ने पिछले चुनाव में भाजपा का समर्थन किया और वे इस बार भी करेंगे।

तीसरे, राज्य में कृषि सुधारों के कारण कृषि बजट और भाजपा की कल्याणकारी योजनाएं ऐसी हैं जो अधिक गरीब लोगों और श्रमिकों तथा खेतिहर लोगों के लिए विशेष रूप से तैयार की गई है, अत: वे पूरे हृदय से भाजपा का समर्थन करेंगे तथा राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में भाजपा का समर्थन और अधिक बढ़ेगा।

चौथे, डॉ. मनमोहन सिंह के नेतृत्व में कांग्रेस-नीत यूपीए सरकार में भारी भ्रष्टाचार, उच्च मुद्रास्फीति, आसमान छूती महंगाई, गैर-कांग्रेसी सरकारों के प्रति उपेक्षा भाव और कांग्रेस सरकार की जन-विरोधी नीतियों ने केन्द्र की यूपीए सरकार की विश्वसनीयता एवं छवि बिगाड़ कर रख दी है। इसके अलावा भी, कर्नाटक राज्य में कांग्रेस बंटी हुई है। अत:, इससे नगरीय क्षेत्रों में निश्चित ही भाजपा का वोट प्रतिशत बढ़ेगा, और कांग्रेस को नगरों के सबसे बड़े मध्यम वर्ग के वोटों से हाथ धोना पड़ेगा और वह बुरी तरह पिटेगी। उनका मानना है कि पार्टी राष्ट्रीय अध्यक्ष राजनाथ सिंह और अन्य वरिष्ठ नेताओं द्वारा राज्य में उम्मीदवारों के लिए प्रचार करने से भाजपा की विजय की संभावनाएं बढ़ जाएंगी और अंत में इस बार कांग्रेस के विश्वासघात के कारण आम लोगों में पैदा हुई कुंठा भाजपा को विजय दिलाने में सबसे अधिक प्रमुख रहेगी। इससे कांग्रेस के अलावा अन्य पार्टियों की सफलता की संभावनाएं अधिक रहेंगी। ■

जगदीश शेट्टार के नेतृत्व में कर्नाटक विधानसभा चुनाव लड़ेगी भाजपा

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि पार्टी श्री जगदीश शेट्टार के नेतृत्व में कर्नाटक विधानसभा का चुनाव लड़ेगी।

गौरतलब है कि श्रीमती सुषमा स्वराज और श्री अरूण जेटली सहित कई पार्टी नेताओं के साथ सिंह कर्नाटक में भाजपा के प्रचार की शुरूआत करने के लिए 8 अप्रैल को नई दिल्ली से बेंगलूरू के लिए रवाना हुए, लेकिन जिस हवाई जहाज से वे जा रहे थे उसमें कुछ खराबी पैदा हो गई। इसके चलते विमान कुछ देर की उड़ान के बाद वापस लौट आया। बाद में उन्होंने यहीं से वीडियो कांफ्रेंसिग के जरिए बेंगलूर की सभा को संबोधित किया। संबोधन में भाजपा अध्यक्ष ने कर्नाटक की भाजपा सरकार की उपलब्धियों का जिक्र करते हुए कहा कि हमारी सरकार ने पांच वर्षों के अंदर अच्छा काम किया है। हमने गांव-गांव तक पेयजल पहुंचाने का महत्वपूर्ण काम किया।

पंचायती संस्थाओं के सशक्तिकरण में कर्नाटक पूरे देश में प्रथम क्रमांक पर है। बेंगलूरू में हमने वर्ल्ड क्लास की बस सेवा प्रारम्भ की। मुख्यमंत्री सड़क योजना के तहत गांव को पक्की सड़कों से जोड़ा। गत तीन साल में तीन लाख नए रोजगार सृजित किए। श्री सिंह ने कहा कि मुख्यमंत्री जगदीश शेट्टार जिस ईमानदारी से काम कर रहे हैं वह प्रशंसनीय है। श्री सिंह ने कर्नाटक की जनता से आह्वान करते हुए कहा कि आप हमें स्पष्ट बहुमत दीजिए हम श्री शेट्टार को मुख्यमंत्री बनाएंगे।■

भाजपा सिर्फ राजनीतिक दल नहीं, एक सांस्कृतिक अभियान : लालकृष्ण आडवाणी

भारतीय जनता पार्टी, उत्तर प्रदेश कार्यसमिति की बैठक 3 एवं 4 अप्रैल को चित्रकूट में संपन्न हुई। बैठक का उद्घाटन पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी ने किया। इस मौके पर श्री आडवाणी ने प्रख्यात समाजवादी चिंतक राम मनोहर लोहिया और भाजपा के सिद्धांत पुरुष दीनदयाल उपाध्याय के सपनों का भारत-पाकिस्तान महासंघ की सम्भावनाओं की बात उठायी।

श्री आडवाणी ने कहा कि जनसंघ और इसकी उत्तराधिकारी भाजपा केवल राजनीतिक दल नहीं है बल्कि एक सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के महान अभियान का हिस्सा है, लिहाजा उनकी बड़ी जवाबदेही है।

पूर्व उप प्रधानमंत्री ने कहा कि दीनदयाल उपाध्याय ने डॉक्टर लोहिया से कहा था कि एक दिन आयेगा जब पाकिस्तान के अधिकांश मुसलमान इस बात को समझेंगे कि उन्होंने भारत का विभाजन करके या खुद को भारत से अलग करके अपना नुकसान ही किया है। ऐसी स्थिति जब आयेगी तब पूरी सम्भावना होगी कि भारत और पाकिस्तान मिलकर एक संघात्मक ढांचा बनायें। वे एक नहीं होंगे पर दोनों का महासंघ बन सकता है।

श्री आडवाणी ने कहा कि डॉ. लोहिया ने दीनदयालजी के इस विचार को अद्भुत बताते हुए एक संयुक्त वक्तव्य जारी किया था जिस पर जनसंघ की तरफ से दीनदयालजी और समाजवादी पार्टी की ओर से डॉ. लोहिया ने हस्ताक्षर किये थे। डॉ. लोहिया ने इसे बहुत बड़ा कदम करार देते हुए कहा था कि इससे व्यापक जनमानस जनसंघ को स्वीकार करने को तैयार हो जाएगा।

उन्होंने कहा कि डॉ. लोहिया ने एक बार उनसे कहा था कि वह समाजवादी हैं लेकिन भारतीय जनसंघ के राष्ट्रवाद के आदर्श का सम्मान करते हैं।

श्री आडवाणी ने कहा, ''दो साल पहले डॉ. लोहिया के जन्मदिन पर प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने उनसे पूछा था कि भारत-पाक महासंघ बनने की कितनी सम्भावना है और तब मैंने कहा था कि जब दीनदयाल जी ने कहा था तब तात्कालिक परिस्थितियों में आगे चलकर महासंघ के गठन की स्थितियां बन सकती थीं। अटल जी के प्रधानमंत्रित्व काल में भी ऐसा हो सकता था। लेकिन अगर आप पाकिस्तान से हर कीमत पर वार्ता जारी रखने की नीति अपनाएंगे तो महासंघ नहीं बन सकेगा।''

भाजपा नेता ने आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर पार्टी की मन:स्थिति का जिक्र करते हुए कहा, ''हम चुनाव लड़ेंगे, जीतेंगे, हारेंगे, आगे बढ़ जाएंगे लेकिन सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के महान अभियान का हिस्सा होने के नाते हमारी जवाबदेही बड़ी है। इस बात को हमारा कार्यकर्ता जितना अधिक समझेगा उतना ही अच्छा होगा।''

उन्होंने कहा, ''कोई भी दल विशिष्ट परिस्थितियों में जन्म लेता है। धीरे-धीरे हालात बदलते हैं लेकिन मूल सिद्धांत नहीं बदलते। अगर उन सिद्धांतों को अक्षुण्ण रखकर पार्टी के नेता परिवर्तित हालात में अपने मूल सिद्धांतों की व्याख्या कर सकें तो वह बहुत बड़ा कौशल कहा जाएगा।''

अध्यक्षीय संबोधन में उत्तर प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री लक्ष्मीकांत वाजपेयी ने केंद्र और राज्य सरकार पर जमकर प्रहार किया। श्री वाजपेयी ने कहा कि चित्रकूट की पावन धरती से जिस तरह

राम ने 14 वर्ष का बनवास काटकर रावण पर विजय प्राप्त किया था, उसी तरह इसी धरती से भाजपा के कार्यकर्ता सपा और कांग्रेस की सरकार को उखाड़ फेंकने का काम करेंगे।

श्री वाजपेयी ने कहा कि जिस तरह प्रदेश में सपा के एक वर्ष के कार्यकाल में ही छोटे बड़े 34 दंगे हुए हैं तो सोचिए पांच वर्षों के बाद सूबे का क्या हश्र होगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश में कहीं भी कोई भी सुरक्षित नहीं है। सरेआम महिलाओं की आबरू के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है और कानून व्यवस्था नाम की कोई चीज नहीं रह गई है।

भाजपा नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी ने आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर पार्टी की मन:स्थिति का जिक्र करते हुए कहा, ''हम चुनाव लड़ेंगे, जीतेंगे, हारेंगे, आगे बढ़ जाएंगे लेकिन सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के महान अभियान का हिस्सा होने के नाते हमारी जवाबदेही बड़ी है। इस बात को हमारा कार्यकर्ता जितना अधिक समझेगा उतना ही अच्छा होगा।''

कार्यकारिणी की बैठक के दूसरे और अंतिम दिन सबसे पहले बुंदेलखंड प्रस्ताव पेश किया गया। इसमें बुंदेलखंड की वर्तमान हालत के लिए समाजवादी पार्टी (सपा), बहुजन समाज पार्टी (बसपा) और कांग्रेस को जिम्मेदार ठहराया गया है।

कार्यसमिति की बैठक में राजनीतिक प्रस्ताव पारित किया गया, जिसके माध्यम से भाजपा ने राज्य की वर्तमान सरकार की कार्यशैली पर सवाल उठाते हुए किसानों, व्यापारियों, बेरोजगार युवकों, शिक्षकों एवं मजदूरों के साथ अन्याय करने का आरोप लगाया है। उत्तर प्रदेश विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष और भाजपा के वरिष्ठ नेता केसरी नाथ त्रिपाठी ने राजनीतिक प्रस्ताव पेश किया। प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह के बेटे और संगठन के प्रदेश महामंत्री राजबीर सिंह ने इसका समर्थन किया। इस प्रस्ताव में राज्य की मौजूदा सरकार पर कई तरह के गंभीर आरोप लगाए गए हैं। इसमें कहा गया है कि सूबे में कानून-व्यवस्था पूरी तरह से ध्वस्त हो चुकी है। वर्तमान सरकार के अब तक के कार्यकाल में 2,500 से अधिक हत्याएं, 550 से अधिक दुष्कर्म, 2,500 से अधिक चोरी एवं लूट की घटनाएं हो चुकी हैं। प्रस्ताव के मुताबिक, उत्तर प्रदेश में आए दिन हो रही अपहरण की घटनाओं ने उद्योग का रूप ले लिया है। अब तक 400 से अधिक अपहरण की घटनाएं हो चुकी हैं। प्रदेश में 34 सांप्रदायिक दंगे हुए। अराजक तत्वों के खिलाफ कार्रवाई करना तो दूर, उल्टा उन्हें संरक्षण दिया जा रहा है।

प्रस्ताव में केंद्र एवं राज्य सरकारों पर तुष्टीकरण को बढ़ावा देने का आरोप लगाया गया है। इसमें कहा गया है कि उत्तर प्रदेश में विकास पूरी तरह ठप पड़ा है। मूलभूत ढांचों के विकास के लिए कोई ठोस योजना सरकार के पास नहीं है। वर्तमान सरकार का विकास कार्य केवल तीन चार जिलों तक ही सीमित होकर रह गया है और शेष उत्तर प्रदेश पूरी तरह उपेक्षित है। बुंदेलखंड क्षेत्र में कृषि, सिंचाई, पेयजल आपूर्ति, रोजगार व व्यवसाय के प्रति सरकार के उदासीन रवैये पर भी चिंता जाहिर की गई है। भाजपा ने आरोप लगाया है कि केंद्र से प्राप्त पैकेज भी लूट की भेंट चढ़ गया है।

कार्यसमिति की बैठक में बुंदेलखंड की दुर्दशा पर भी प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया। इसमें बुंदेलखंड की दुर्दशा के लिए सपा, बसपा और कांग्रेस को जिम्मेदार ठहराया गया है। प्रस्ताव में कहा गया है कि वर्ष 1991-92 में प्रदेश में भाजपा की सरकार बनने पर इस क्षेत्र के लिए वार्षिक बजट में विशेष पैकेज की व्यवस्था की गई थी, लेकिन पिछले 10 वर्षों में सपा और बसपा के नेतृत्व वाली उत्तर प्रदेश की सरकारों ने इस क्षेत्र के समुचित विकास के लिए कोई कदम नहीं उठाया।

बुंदेलखंड प्रस्ताव के जरिये भाजपा ने इस क्षेत्र के विकास का खाका भी खींचने की कोशिश की है। प्रस्ताव के मुताबिक, भाजपा यदि केंद्र में सरकार बनाने में कामयाब रही तो हर द्वार पर पानी पहुंचाने की मुहिम शुरू की जाएगी। इलाके में हो रहे धर्मांतरण रोकने के लिए ठोस कदम उठाए जाएंगे। वन सम्पदा आदिवासियों के लिए, जल सम्पदा निषाद व मल्लाह एवं केवटों के लिए घोषित की जाएगी।

प्रस्ताव के मुताबिक, बुंदेलखंड के किसानों को कृषि कार्य हेतु बिना ब्याज ऋण उपलब्ध कराया जाएगा। पर्यटन क्षेत्रों के विकास के लिए समुचित कदम उठाए जाएंगे। प्रस्ताव के जरिये भाजपा ने बुंदेलखंड के लोगों से कई और वादे भी किए हैं।

डॉ. राम मनोहर लोहिया रामायण मेला परिसर में भाजपा के उत्तर प्रदेश इकाई के महासचिव रामनाथ कोविंद ने बुंदेलखंड प्रस्ताव पेश किया, जबकि बुंदेलखंड की विधायक साध्वी निरंजन ज्योति ने इसका समर्थन किया। ■

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. कलाम ने किया अटल ज्योति अभियान का शुभारंभ

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने अपेक्षा व्यक्त की है कि विकास के क्षेत्र में मध्यप्रदेश पूरे देश के लिए रोल मॉडल बने। डॉ. कलाम भोपाल में 2 अप्रैल को अटल ज्योति अभियान के तहत भोपाल जिले के ग्रामों में सातों दिन 24 घंटे विद्युत प्रदाय की महत्वाकांक्षी योजना का शुभारंभ कर रहे थे। इस अवसर पर आयोजित भव्य समारोह में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि हर हाथ को काम, हर खेत को पानी और 24 घंटे बिजली देकर प्रदेश को देश और दुनिया का सबसे महत्वपूर्ण राज्य बनाएंगे। इस अभियान के तहत जिले के सभी गाँव में अब 24 घंटे बिजली मिलेगी। अटल ज्योति अभियान के तहत 24 घंटे बिजली उपलब्धता वाला भोपाल प्रदेश का सातवां जिला है।

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने अटल ज्योति अभियान के अंतर्गत गैर कृषि उपभोक्ताओं को 24 घंटे और कृषि उपभोक्ताओं को 8 घंटे विद्युत उपलब्ध करवाने को महान कार्य बताते हुए मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और राज्य सरकार को बधाई दी। उन्होंने कहा कि ऊर्जा की उपलब्धता से जनशक्ति की क्षमता का निर्माण संभव होता है। उन्होंने कहा कि 2014 तक ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर होने की योजना से मध्यप्रदेश में हर नागरिक सशक्त बनेगा।

डॉ. कलाम ने मानव समाज के विकास और समृद्धि में ऊर्जा के महत्व की चर्चा करते हुए कहा कि ऊर्जा की बचत ही ऊर्जा उत्पादन का सबसे उपयुक्त तरीका है। इसके लिए सामाजिक जागरूकता जरूरी है। उन्होंने कहा कि विद्युत वितरण में कई राज्य में हानि बहुत ज्यादा मात्रा में है। ऊर्जा की खपत को 50 प्रतिशत तक कम किया जा सकता है।

डॉ. कलाम ने ऊर्जा की उपलब्धता के जरिए लोगों का सशक्तिकरण करने की पहल की सराहना करते हुए कहा कि इससे सभी लोगों को आजीविका निर्माण का मौका मिलेगा। उन्होंने कहा कि विद्युत उत्पादन, वितरण और विपणन के क्षेत्र में मध्यप्रदेश के प्रयास अपने आप में एक अनुपम अनुभव है। पूर्व राष्ट्रपति ने वितरण क्षमता की चर्चा करते हुए कहा कि न्यूनतम हानि के साथ विद्युत का ट्रांसमिशन और वितरण होना चाहिए। वैश्विक मापदंड के अनुरूप ट्रांसमिशन क्षमता बढ़ाने की जरूरत बताते हुए उन्होंने कहा कि ऊर्जा की हानि को कम कर ऊर्जा की मांग को भी कम किया जाना चाहिये। उन्होंने ट्रांसमिशन और वितरण के क्षेत्र में मध्यप्रदेश के उत्कृष्ट प्रदर्शन की सराहना की। डॉ. कलाम ने ऊर्जा की बचत के संबंध में कहा कि ईको फ्रेंडली आधुनिक प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए ऊर्जा की खपत कम करने वाले भवन बनाये जाना चाहिये।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि ग्रामीण युवा शक्ति का सकारात्मक उपयोग कर प्रदेश को देश का समृद्ध प्रदेश बनाने का संकल्प लिया गया है। ग्रामीण मध्यप्रदेश में छोटे उद्योगों की श्रंखला बिछाई जाएगी। इसमें 24 घंटे विद्युत की उपलब्धता की महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी। श्री चौहान ने कहा कि जहाँ देश के विभिन्न राज्य द्वारा बिजली की दरें बढ़ाई जा रही हैं वहाँ मध्यप्रदेश ने इसमें कोई बढ़ोत्तरी नहीं की।

कार्यक्रम में पूर्व मुख्यमंत्री कैलाश जोशी, पूर्व मुख्यमंत्री सुन्दरलाल पटवा, सांसद नरेन्द्र सिंह तोमर, नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री बाबूलाल गौर, वित्त मंत्री राघव जी, गृह मंत्री उमाशंकर गुप्ता, महापौर श्रीमती कृष्णा गौर, विधायक, ग्रामीण क्षेत्रों से आए किसान तथा बड़ी संख्या में युवा उपस्थित थे। आभार प्रदर्शन भोपाल जिले के प्रभारी तथा जल संसाधन मंत्री जयंत मलैया ने किया। ■